क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु

जन-सम्पर्क

भाग-४

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

परिचय

आचार्य भिक्षु अध्यात्म परम्परा के ज्योति स्तम्भ थे । उन्होंने अपनी साधना, सजगता, तपस्या, ज्ञान एवं सूझबूझ से ऐसी लौ जलाई जिसके आलोक में आज लाखों व्यक्ति प्रकाशित हैं, उल्लसित हैं । उनकी मेधा व प्रतिभा का कोई सानी नहीं था । कोई भी व्यक्ति किसी भी चिंतन व अपेक्षा से उनके पास आता तो वे उसे निराश नहीं करते थे । वे हर विषय को समझाने में अत्यन्त पटु थे । वे हर बात को दृष्टान्त व कथानक के माध्यम से हरेक के गले उतार देते थे । उनके 'तीन दृष्टान्त' बहुत प्रसिद्ध हैं । उनमें उन्होंने यह समझाने का प्रयत्न किया है कि लौकिक (भौतिक) और लोकोत्तर (आध्यात्मिक) मार्ग पृथक्-पृथक् हैं । मुनि अध्यात्म के लिए उपदेश देते हैं । लौकिक उपलब्धि प्रासंगिक हो सकती है, उसके लिए मुनि कुछ भी नहीं करते ।

आचार्य भिक्षु का हर वर्ग, जाति व धर्म के लोगों के साथ सीधा संबंध था । उनका जनसम्पर्क व्यापक था । ठाकुर (जागीरदार) से लेकर ठेट किसान तक उनसे प्रभावित थे और उनके प्रवचनों व धर्मचर्चाओं में पूरा रस लेते थे । प्रस्तुत भाग में आचार्य भिक्षु के जनसम्पर्क की एक झलक प्रदर्शित की गई है ।

मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

विघ्न हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु रो नाम ।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिन्त्या काम ॥

प्रकाशक
मित्र परिषद्
115, ए चित्तरंजन एवेन्यु, कोलकाता - 700 073
फोन : 22352481, 22357935

मुख्य प्रवृत्तियां
- वातानुकूल प्रेक्षाध्यान केन्द्र
- होमियोपेथी व शिशु चिकित्सा केन्द्र
- अस्थि चिकित्सा केन्द्र
- सिलाई - बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र
- समृद्ध पुस्तकालय
- विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति
- विशाल बर्तन भंडार
- असहायों को सहायता
- साहित्य सेवा

संपादक
मुनि उदितकुमार

संस्करण : द्वितीय
आचार्य भिक्षु निर्वाण द्विशताब्दी वर्ष

- अभिवन्दना कर्ता -
श्रीचन्द, उम्मेदसिंह, विजयसिंह मोहोनोत
(डीडवाना)
जयग्रुप ओफ इन्डस्ट्रीज
नं 3 एवं 5, चार्ल्स केम्पबेल रोड़
कोक्स टॉउन, बेंगलोर-560 005
फोन : 25483508 / 25483908
मोबाईल : 98452 12363 / 98450 40099, 20099

मुद्रक :- श्रीं ऑफसेट प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 5699 2695 मोबाईल : 98440 06655
श्रीनिवासा प्रिन्टर्स, बेंगलोर-53. फोन : 23356888

मूल्य : रु २५/-

क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु

एक व्यक्ति ने स्वामीजी (आचार्य भिक्षु) से धर्म चर्चा की। मूल तत्त्व उसके समझ में आ गया, फिर भी वह बोला-

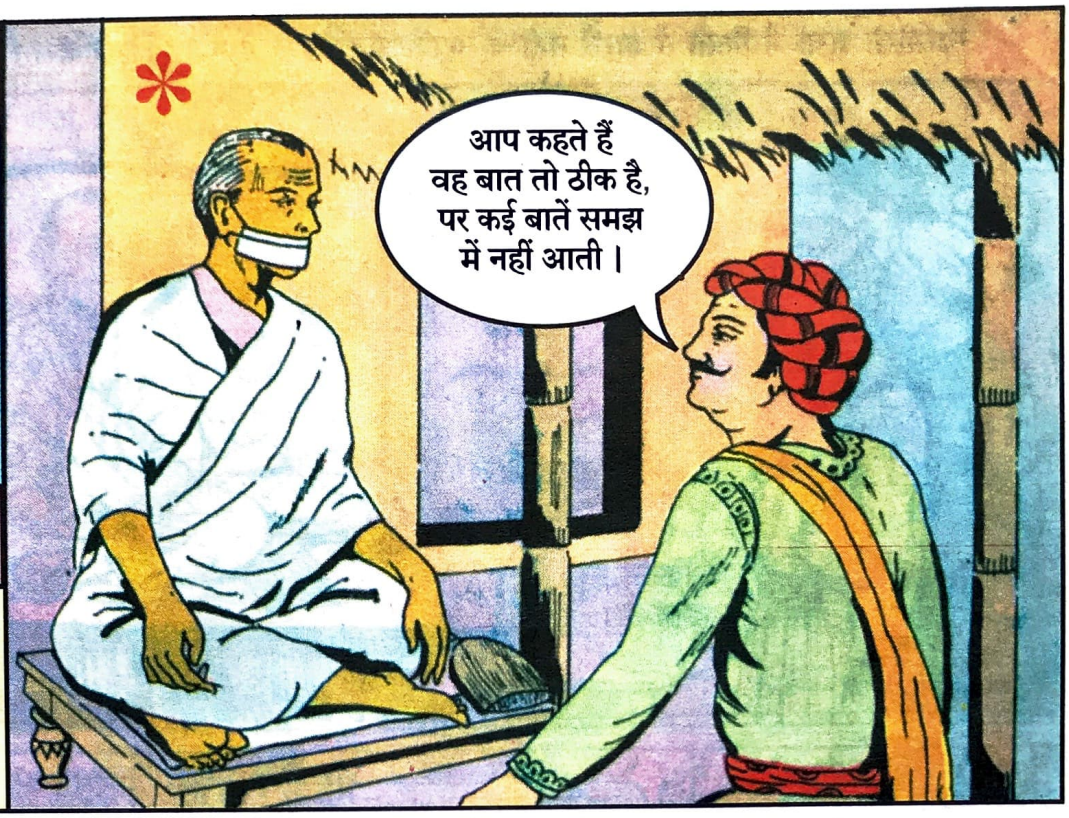

नीचे के चावलों को देखने के लिए बर्तन के नीचे तक हाथ डालता है तो उसका हाथ जल जाता है। इसी प्रकार विवेकी मूल तत्त्व को समझ लेने पर जान लेता है कि दूसरे तत्त्व भी सही हैं।

यह सुनकर वह स्वामीजी का भक्त बन गया

स्वामीजी चर्चा में किसी से हारते नहीं थे, कुछ व्यक्तियों ने षड़यंत्र रचकर हराने की सोची.....

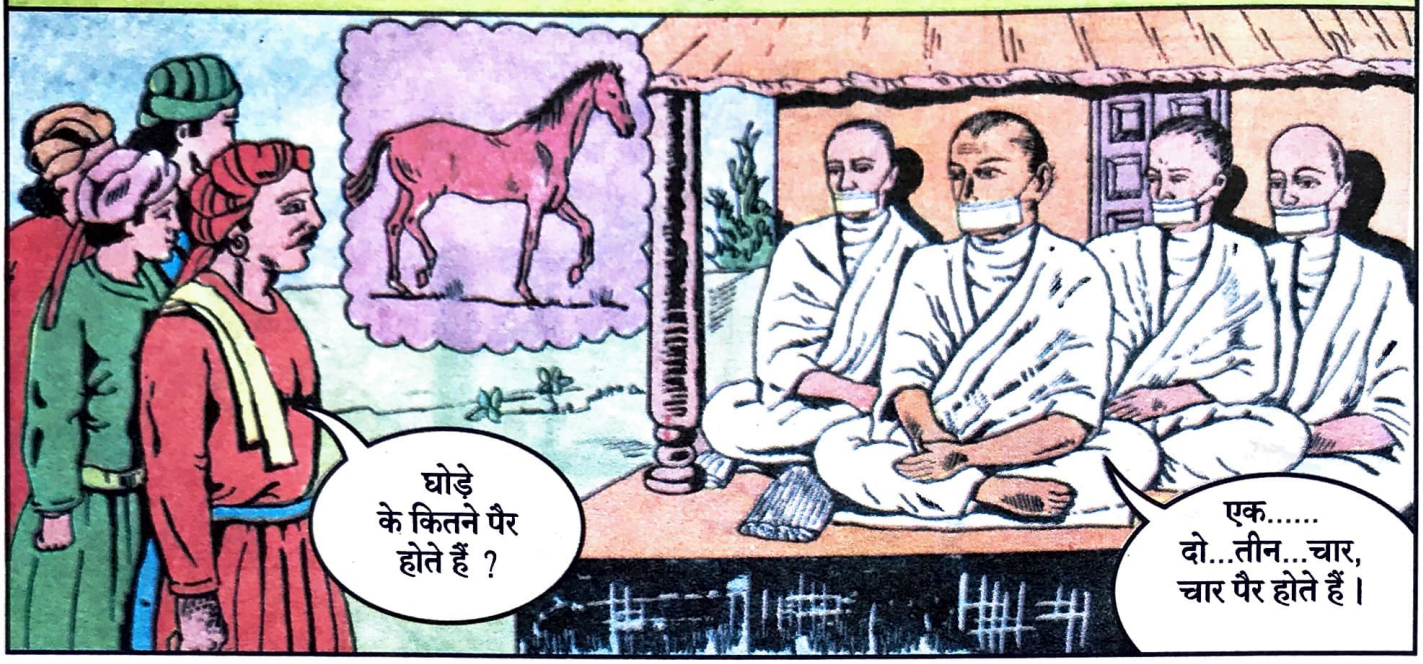

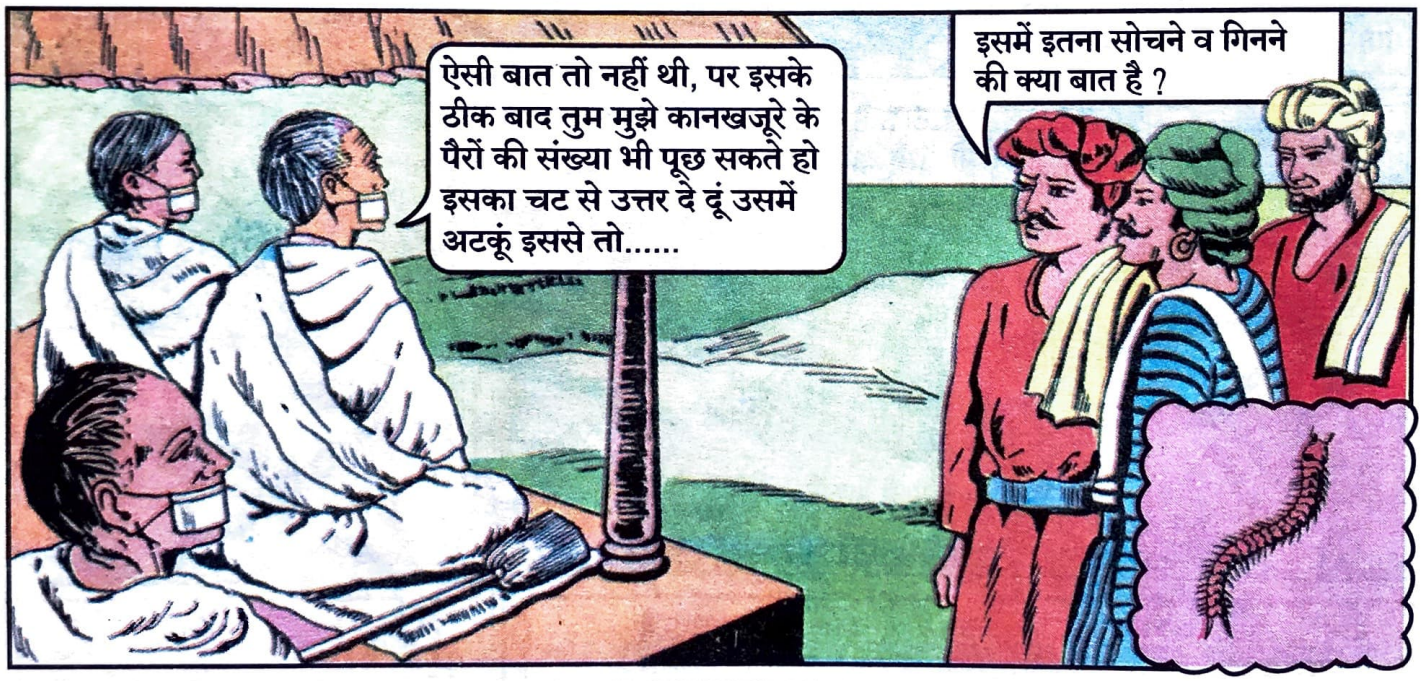

आचार्य भिक्षु की समझाने की पद्धति बड़ी विरल थी। वे बहुत सी बातों को इतने सरल तरीके से समझाते कि हरेक व्यक्ति आश्चर्यान्वित हो जाता। एक बार बूंदी में सवाईरामजी ओस्तवाल स्वामीजी से धर्म चर्चा कर रहे थे। वे चर्चा समाप्त नहीं कर रहे थे तब स्वामीजी ने कहा -

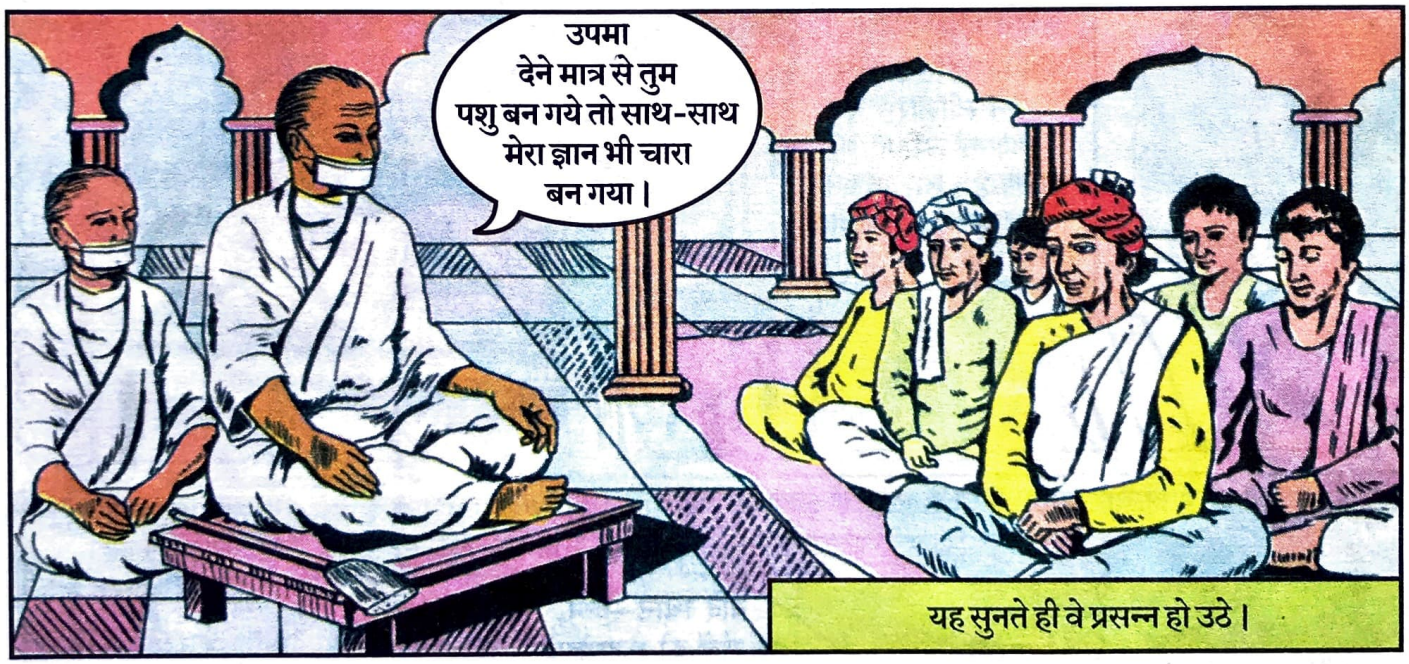

यह सुनते ही वे प्रसन्न हो उठे।

✻ स्वामीजी से चर्चा करते समय न्याय-निर्णय बताने पर भी किसी ने बात नहीं मानी तो स्वामीजी ने कहा -

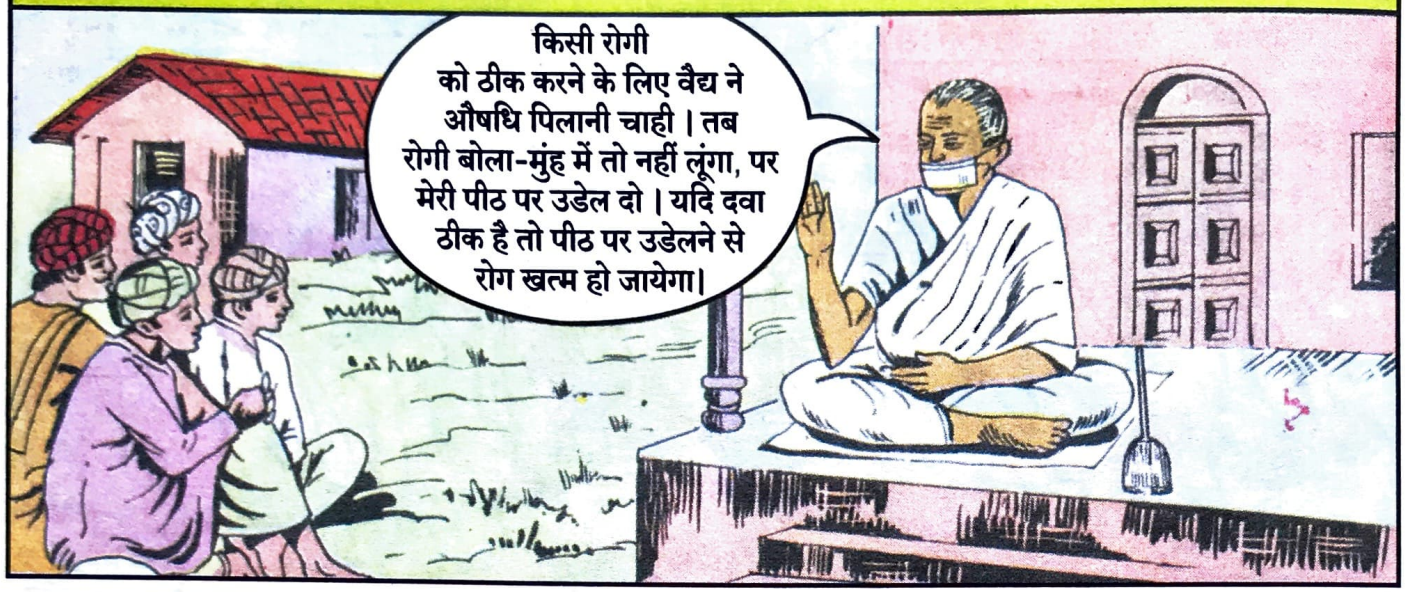

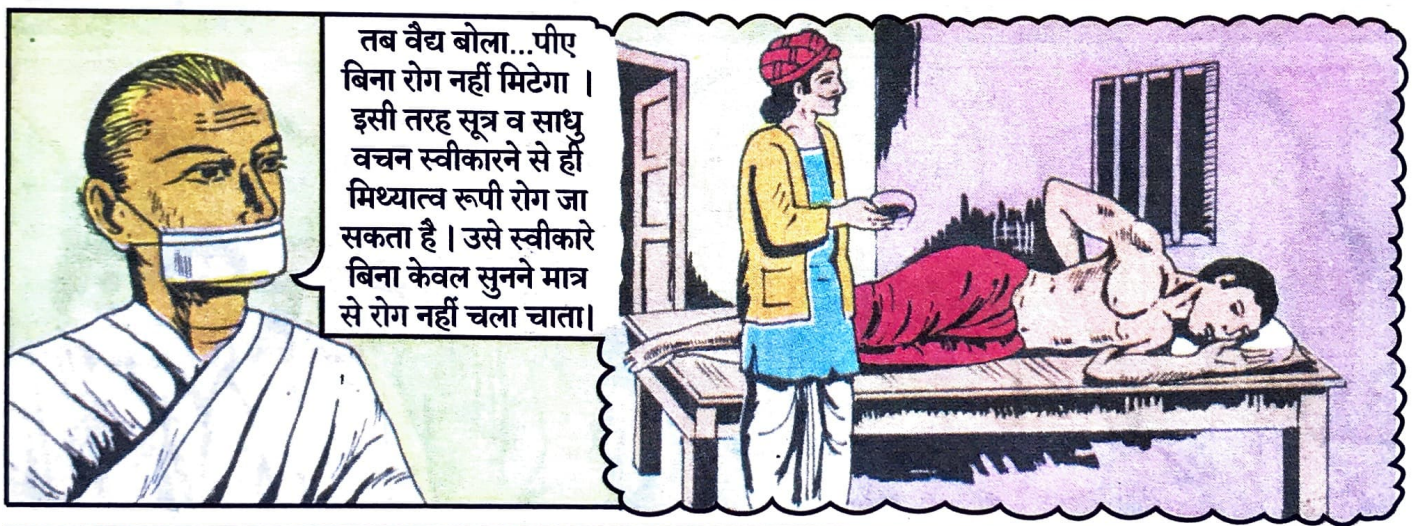

✻ आचार्य भिक्षु जनता के लिए आकर्षण के केन्द्र बने हुए थे। स्थान-स्थान से उनके पधारने तथा संतों को भेजने की मांग होने लगी। उस समय एक व्यक्ति ने कहा -

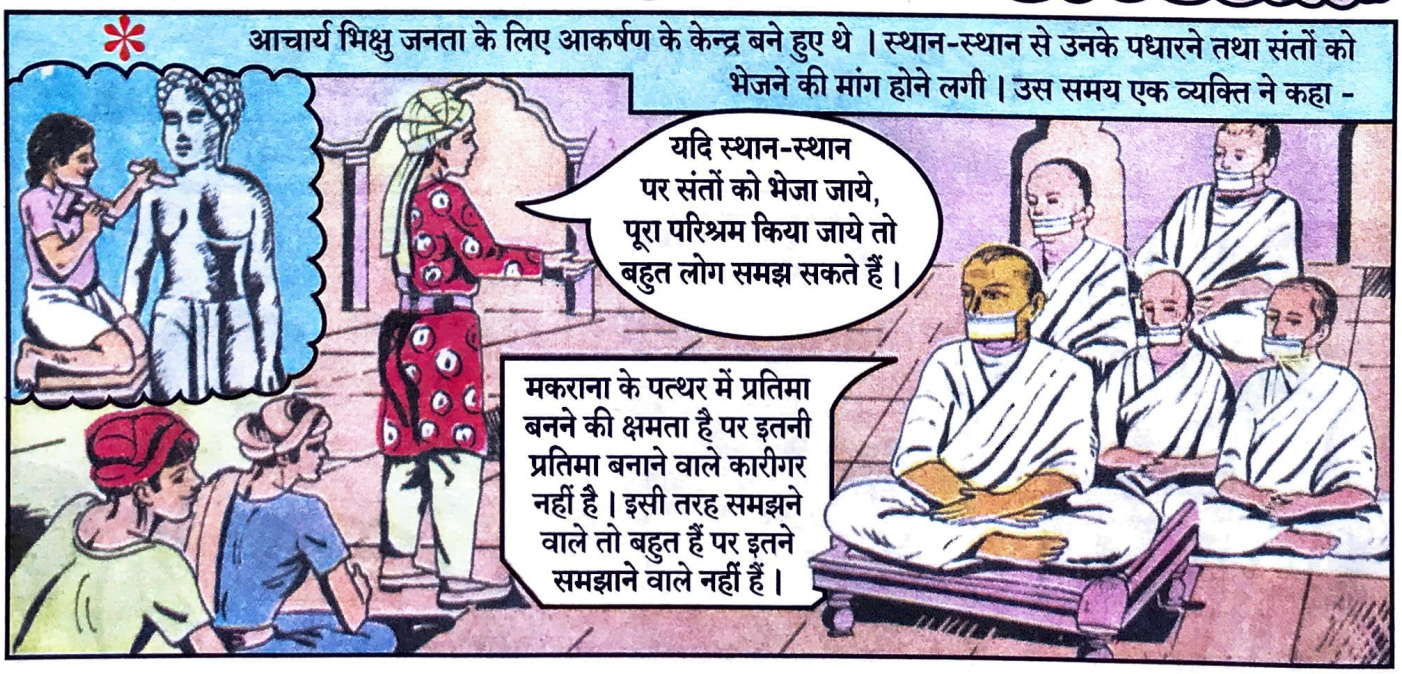

✻ एक व्यक्ति आचार्य भिक्षु से चर्चा करते समय कटु वचनों का प्रयोग करता था। इस पर किसी ने पूछा -

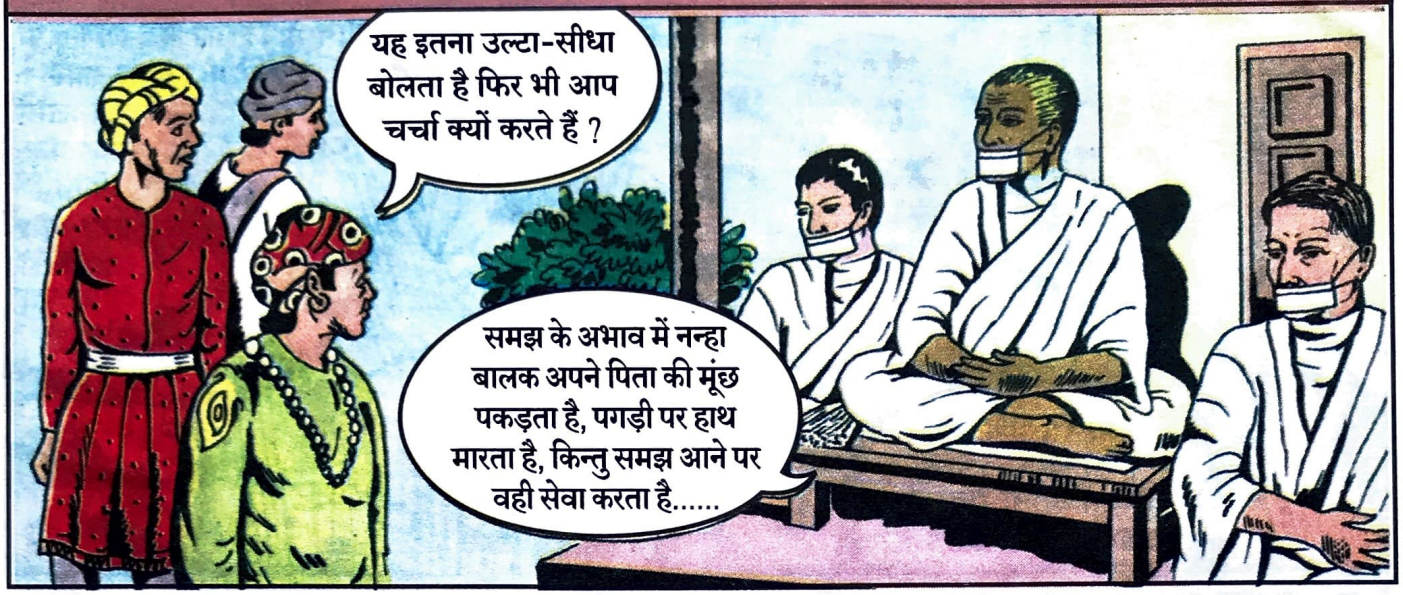

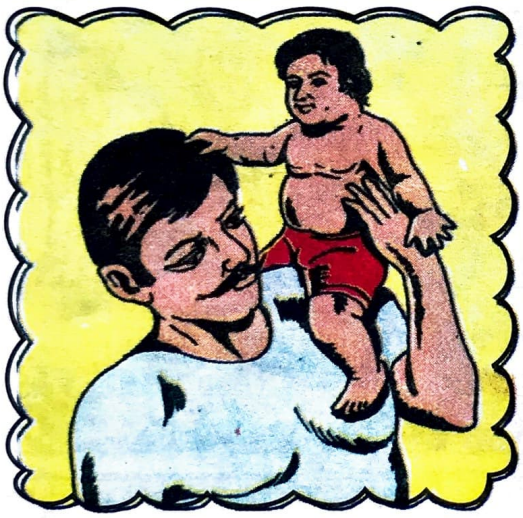

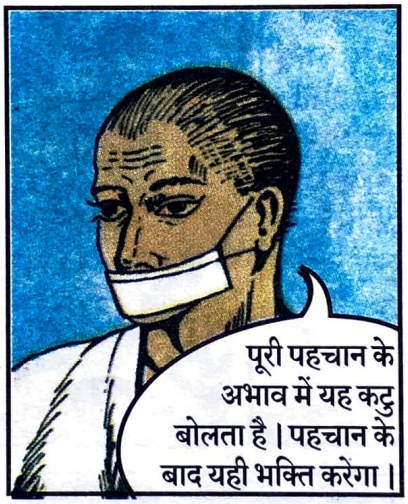

✻ अल्प काल में बनने व विघटित होने वाले धर्मसंघों की दशा देखकर कइयों को यह आशंका थी कि कहीं यह दीर्घजीवी रह सकेगा? ऐसे ही आशंकाग्रस्त व्यक्ति ने पूछा -

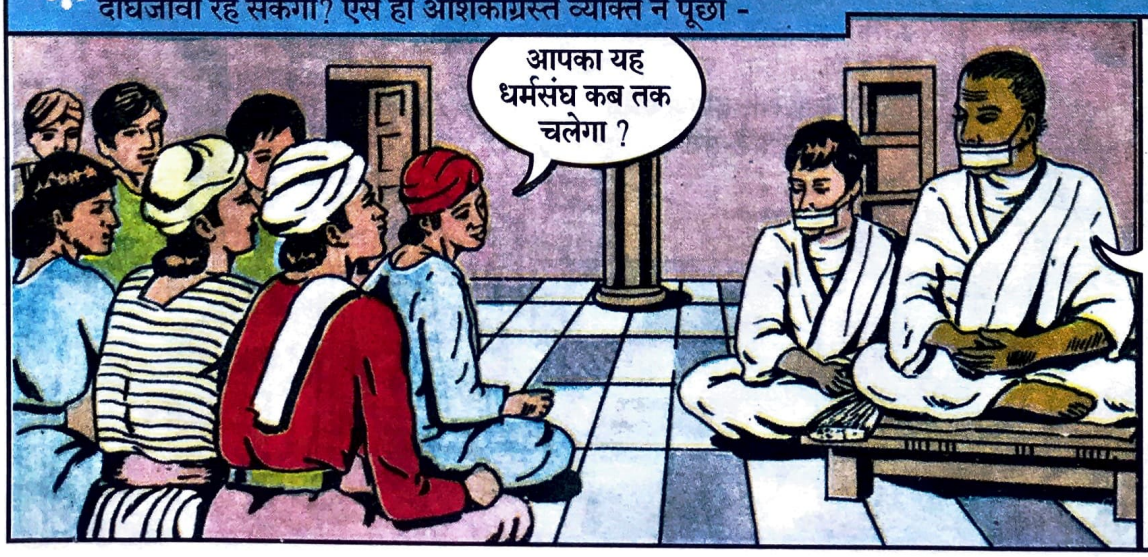

जब तक इसके अनुयायी श्रद्धा व आचार में दृढ़ रहेंगे, वस्त्र, पात्र व उपकरण की मर्यादा का लोप नहीं करेंगे, अपने लिए स्थान बनवाने के झंझट से बचे रहेंगे, हर कार्य मर्यादानुसार करेंगे ; तब तक यह अच्छी तरह से चलता रहेगा।

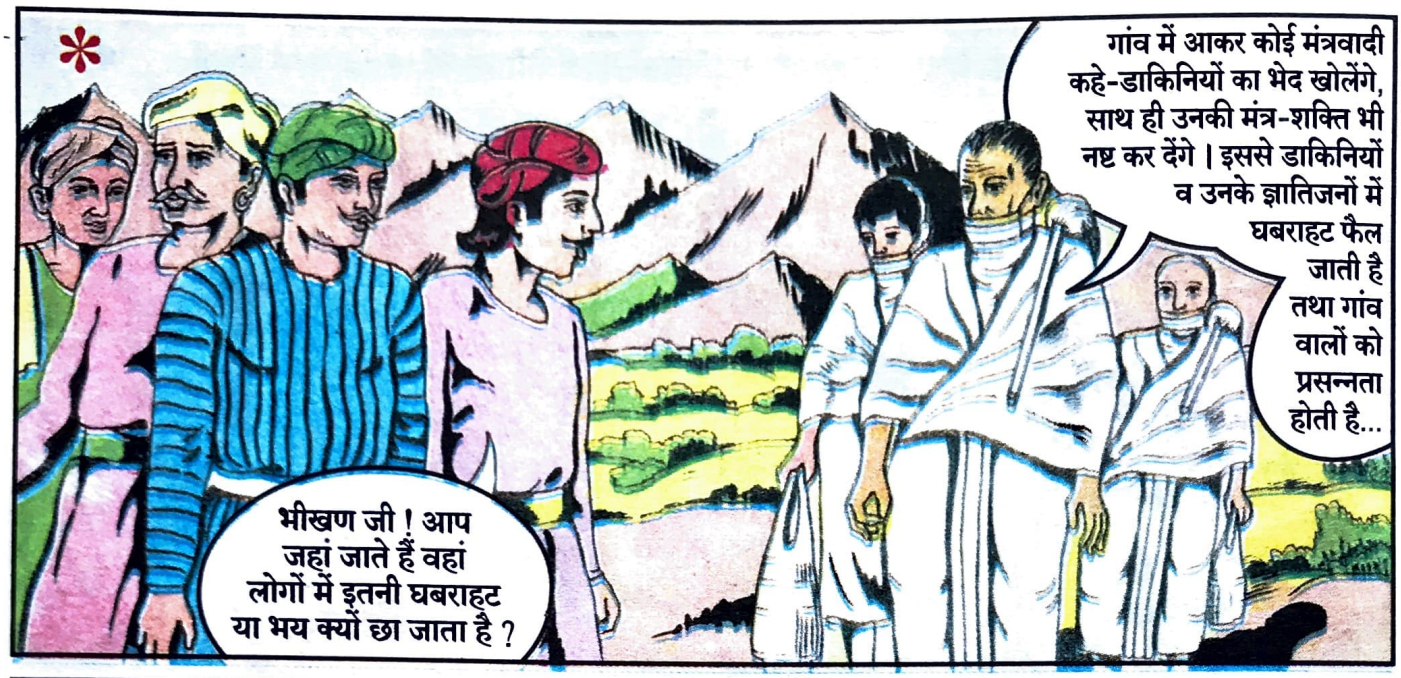

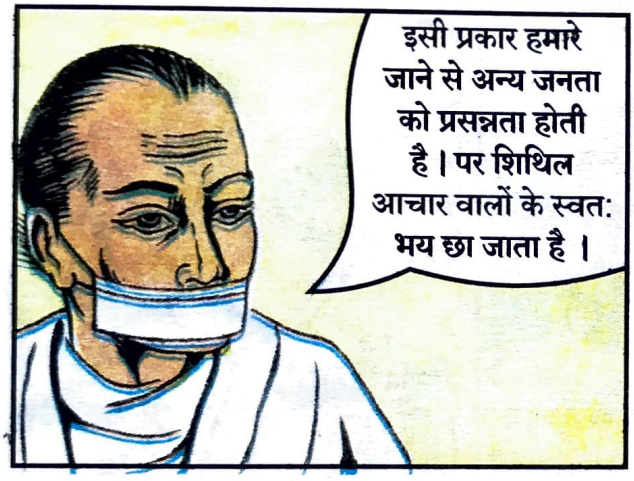

आचार्य भिक्षु वृद्धावस्था में भी खड़े होकर विधियुक्त प्रतिक्रमण किया करते थे ।किसी श्रावक ने निवेदन किया -

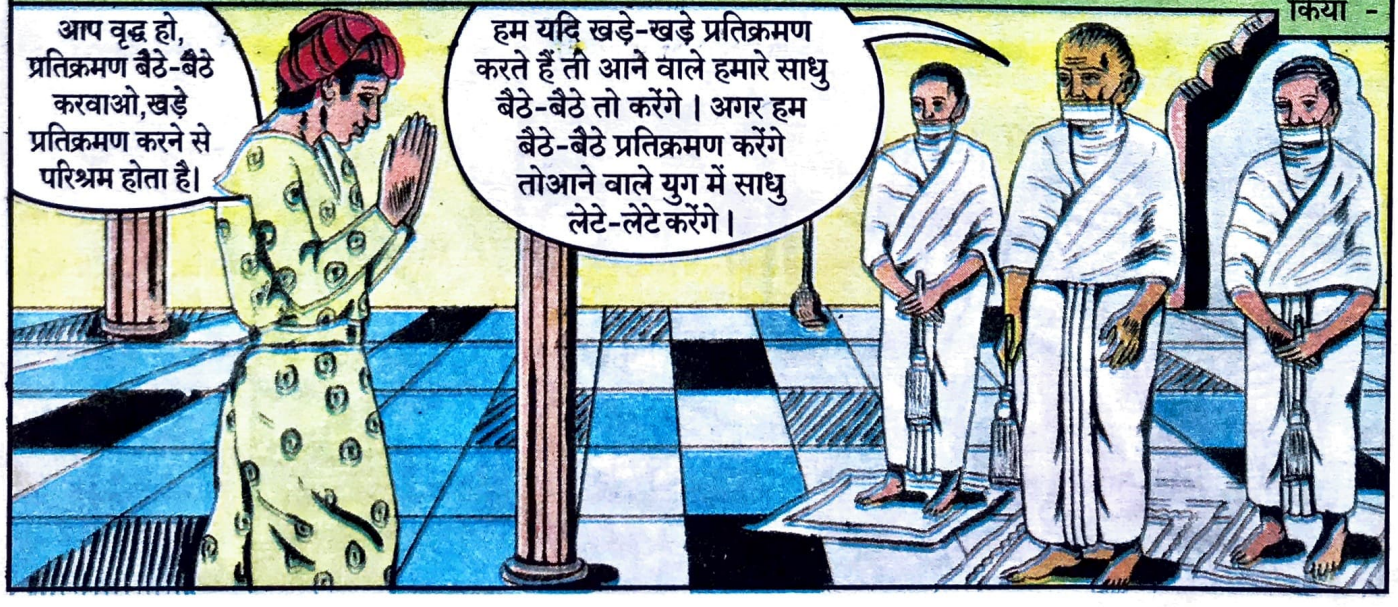

लोगों के उकसाये जाने परएक ब्राह्मण विद्वान आया और पूछा-

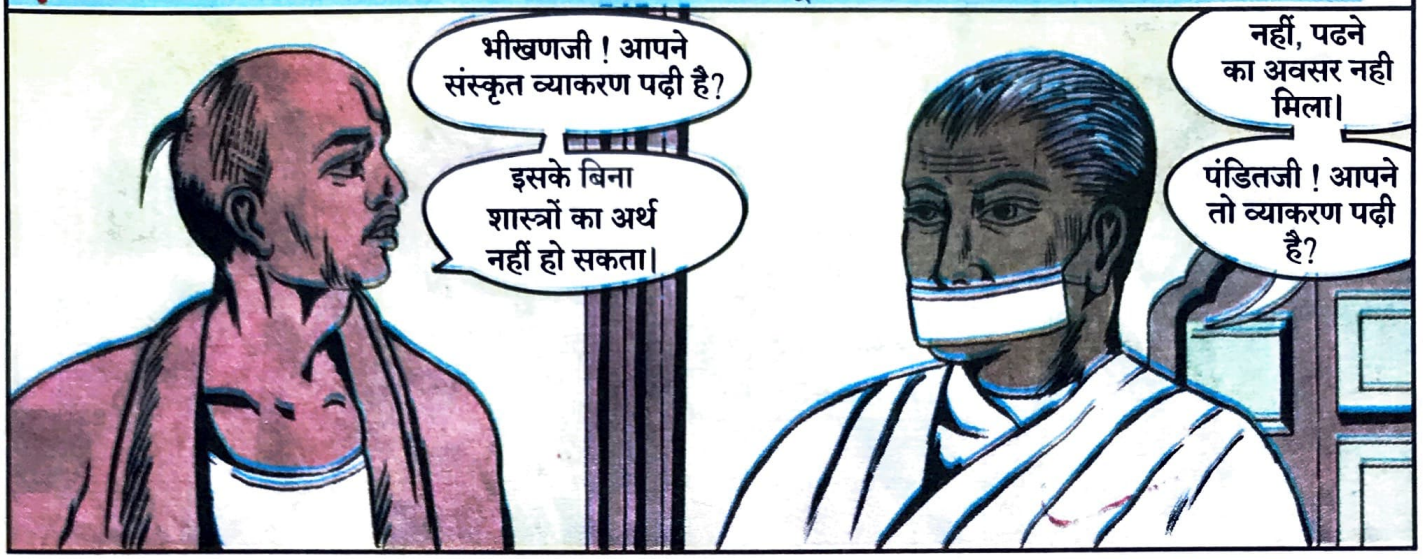

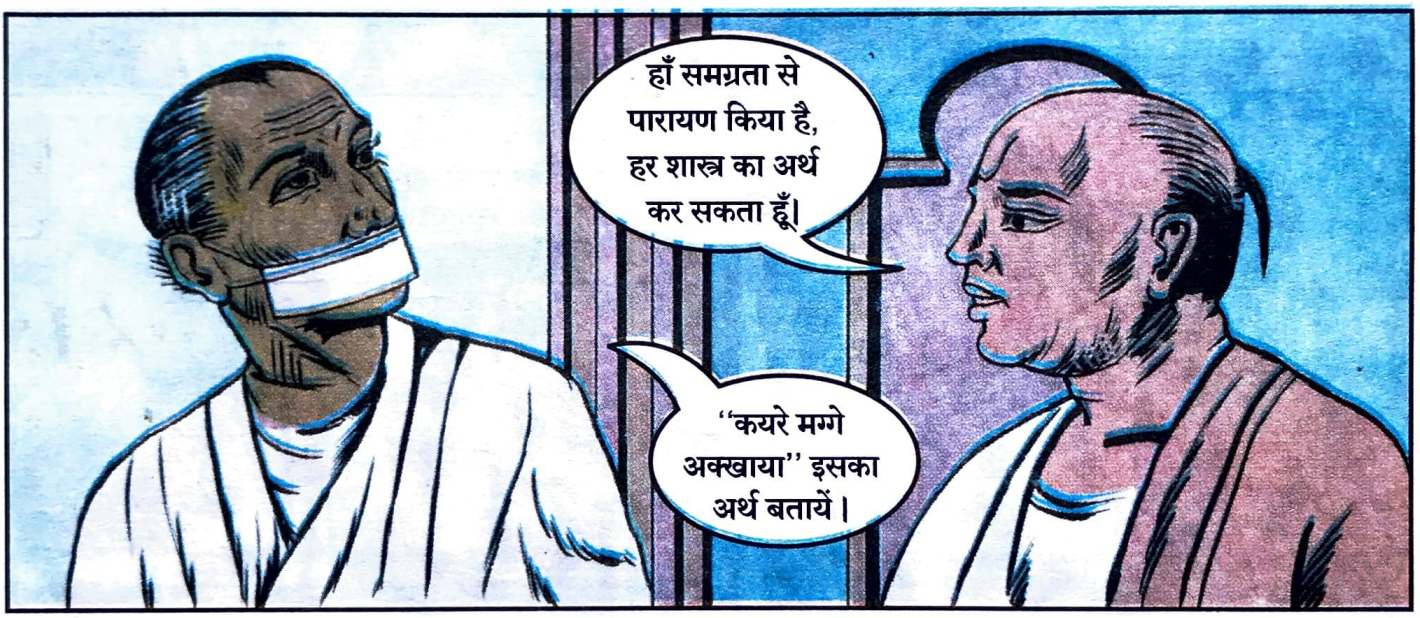

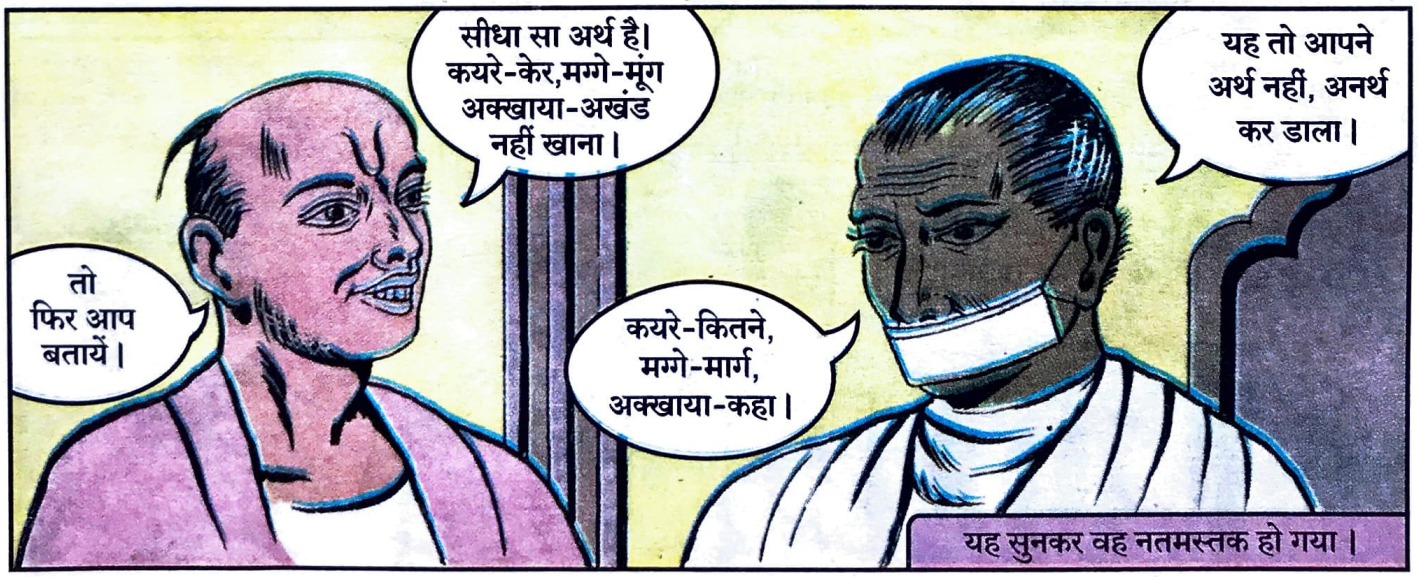

साधु वेश में कोई छोटी-बड़ी गलतियां करते हैं, फिर भी हम गृहस्थों से तो अच्छे ही हैं।

देखो, एक दुकान पर सवेरे-सवेरे एक ग्राहक आया, तांबे का एक पैसा दुकानदार को देते हुए गुड़ मांगा, दुकानदार ने पैसे को..

...मस्तक पर लगाया और उसे गुड़ दे दिया। दूसरे दिन वही व्यक्ति चांदी का रुपया लाया, दुकानदार ने मस्तक के लगाया और पैसे गिन दिये।

...तीसरे दिन वही व्यक्ति खोटा रुपया लेकर आया, तो दुकानदार ने फेंक दिया, इस पर उसने कहा -

आपने तांबे और चांदी के रुपये को माथे लगाया, पर इन दोनों से बने रुपये को फेंक दिया

तांबे व चांदी का स्वतंत्र मूल्य है, पर मिलावट के बाद उनका मूल्य नहीं रहता।

इसी तरह गृहस्थ जीवन व साधुत्व का अपना-अपना मूल्य है। किन्तु नकलीपन का कोई मूल्य नहीं।

जोधपुर नरेश विजयसिंहजी नाथद्वारा दर्शनार्थ जाते समय वर्षा के कारण सिरियारी रुके । आचार्य भिक्षु उस समय वहां चातुर्मास व्यतीत कर रहे थे । नरेश के सामंत एवं दरबारी उनके पास आये । उन्होंने कई प्रश्न पूछे । स्वामीजी ने उनको युक्ति-युक्त उत्तर दिये जिससे वे सभी प्रभावित हुए । उन्होंने कहा -

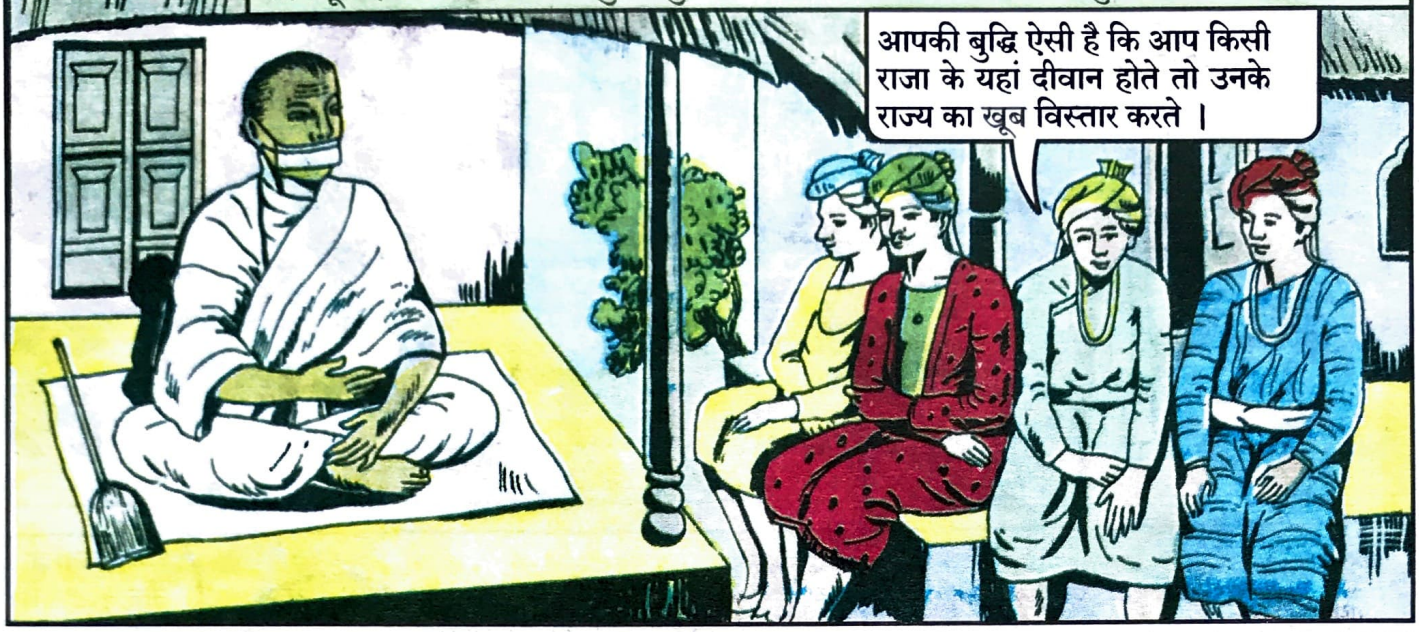

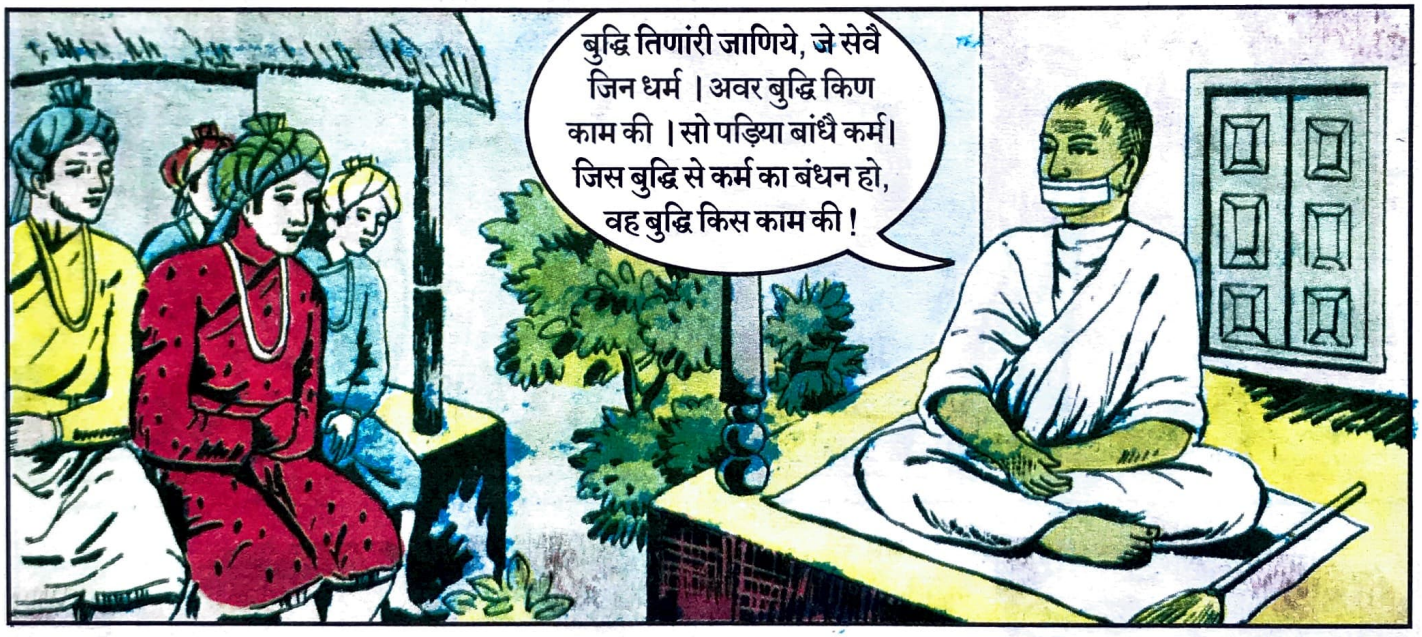

आगरिया गांव के प्रतापजी कोठारी ने पूछा -

आउवा गांव के उत्तमोजी इराणी ने पूछा -
भीखणजी! पहले लखपति, करोड़पति सेठ साहुकारों ने मंदिर बनवाये थे, इसमें यदि धर्म नहीं होता तो वे क्यों बनाते?
तुम्हारे पास पचास हजार रुपये हो तो तुम मंदिर बनाओगे या नहीं?
अवश्य बनाऊंगा ।
यह बताओ कि तुम्हारे में योग कितने, उपयोग कितने ?
यह तो जानकारी नहीं है।
...तो धन के साथ-साथ ज्ञान की अनिवार्यता नहीं ।

एक बार तत्त्व चर्चा में निरुत्तर बने व्यक्ति ने आचार्य भिक्षु के सिर में दे मारी ।
पास मे बैठे लोग उग्र हो उठे, तब उन्हें शांत करते हुए स्वामीजी ने कहा -

तुम जो मटकी खरीदते हो, उसे बजाकर देखते हो या नहीं ?
बजाकर तो देखते हैं, गुरुदेव!

क्या पता इसे भी गुरु बनाना हो, मेरी परीक्षा करता हो ।
वह आदमी झेंप गया और वातावरण शांत हो गया ।

केलवा की प्रवचन-सभा में वहां के ठाकुर मोखमसिंह ने स्वामीजी से पूछा -

गांव-गांव से पधारने की प्रार्थनाएं आती हैं, बहुत स्त्री-पुरुष आपको चाहते हैं । आपको देखकर वे बहुत खुश होते हैं । उन्हें आप बहुत प्रिय लगते हैं, इसका क्या कारण है ? आप में ऐसा कौन सा गुण है ?

किसी साहुकार ने संदेश वाहक को अपने घर भेजा, साथ में रुपया पैसा भी भेजा । सेठानी बहुत खुश हुई । गर्म पानी से पैर धुलाया, भोजन कराया, पास में बैठकर पूछती है सेठजी कैसे हैं? सुखसाता है ? वो कब सोते हैं ? कब उठते हैं ? वह जैसे - जैसे समाचार सुनाता है...

...उसी तरह हम भगवान का गुण एवं उनका संदेश बताते हैं, संसार मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं । यही कारण है कि भाई-बहिन हमारे से राजी रहते हैं ।

...वह बहुत खुश होती है । संदेश वाहक को देखकर नहीं, पति के समाचार सुनकर प्रसन्न होती है ।...

संवत् १८५७ में स्वामीजी के पुर चातुर्मास में किसी सेना के आक्रमण की संभावना हो गई । उनके तब अन्यत्र चले जाने की बात ज्ञात होते ही श्रावक कहने लगे -

हम यहां है तब फिर आप विहार क्यों कर रहे हैं ?

कुछ वर्ष पूर्व स्थानकवासी संतों का चातुर्मास यहां था । सैनिक हमले के समय काफी लोग चले गये, पर संतों ने विहार नहीं किया । लूटपाट मचाते हुए धन की खोज में पूछताछ करते समय सैनिकों ने संतों को बहुत सताया । उनको मिर्चों की धुनी दी । बहुत कष्ट दिया । हम इससे बचना चाहते हैं, इसलिए विहार करने का विचार कर रहे हैं ।

आपको विहार करना ही है तो इतनी जल्दी न करायें हम भी आपके साथ चलेंगें ।

श्रावकों की उक्त प्रार्थना पर स्वामीजी ठहर गये, उसी रात्रि में फौजी हलचल होने से लोग भाग खड़े हुए । प्रातः स्वामीजी ने भी विहार किया और गुरलां पधार गये।

तुम तो साथ में आने की कह रहे थे । फिर रात्रि में ही कैसे भाग खड़े हुए ?

हम पहाड़ी पर से देख रहे थे कि स्वामीजी पधार रहे हैं ।

दूर खड़े होकर देखने से क्या होगा? तुम तो साथ-साथ चलने की बात कह रहे थे...
...गृहस्थ का क्या भरोसा, हमें उनके विश्वास पर अधिक अवलंबित नहीं रहना चाहिये।
स्वामीजी! कुछ व्यक्तियों को तो आप बहुत प्रिय लगते हैं, किंतु कुछ को बिल्कुल नहीं, इसका क्या कारण है?
एक ज्वरग्रस्त व्यक्ति भोज में गया उसे मिष्टान्न परोसे गये तो उसने कहा - मिठाई तो बहुत कड़वी बनी है...

...तब लोग बोले हमको तो बहुत अच्छी लग रही है, तुम्हारे ज्वर है इसलिए कड़वी लग रही है । इसी तरह मिथ्यात्व (विपरीत आस्था) का ज्वर चढ़ा होता है उनको साधु अच्छे नहीं लगते ।

* स्वामीजी का चातुर्मास सिरियारी में था । वहां पोतियाबंध के कपूरजी संवत्सरी आने के बाद अपने ही संप्रदाय की बहिनों से खमत-खामणा करने जा रहे थे । मार्ग में स्वामीजी से कहा -

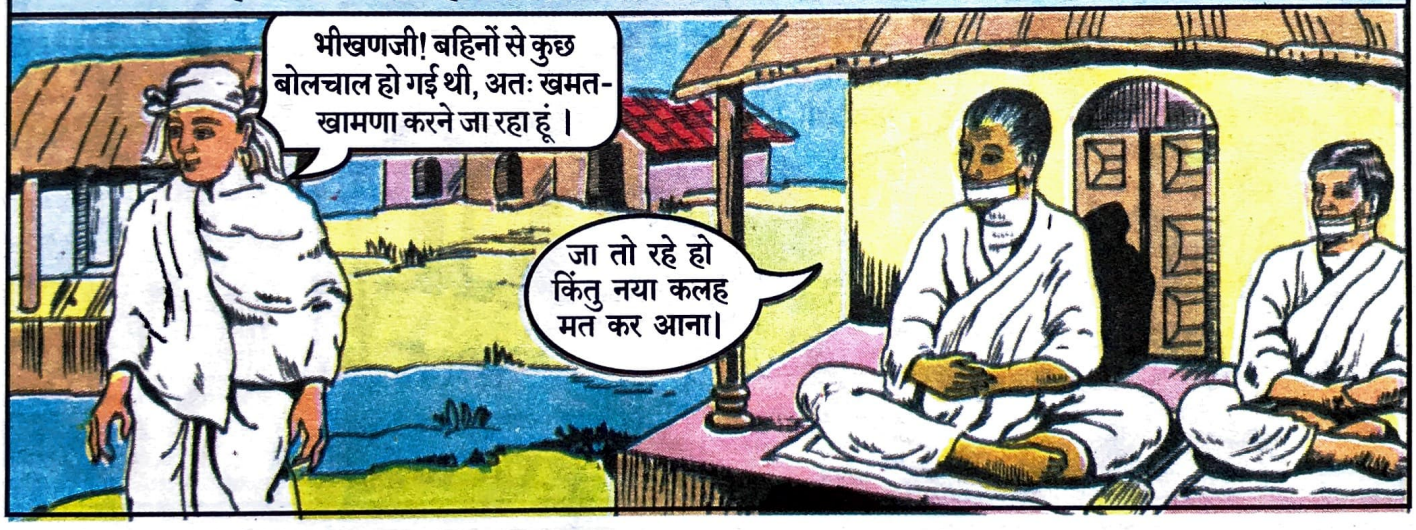

इस प्रकार कलह समाप्त होने की अपेक्षा और बढ़ गया । वापस आते समय स्वामीजी से कहा -

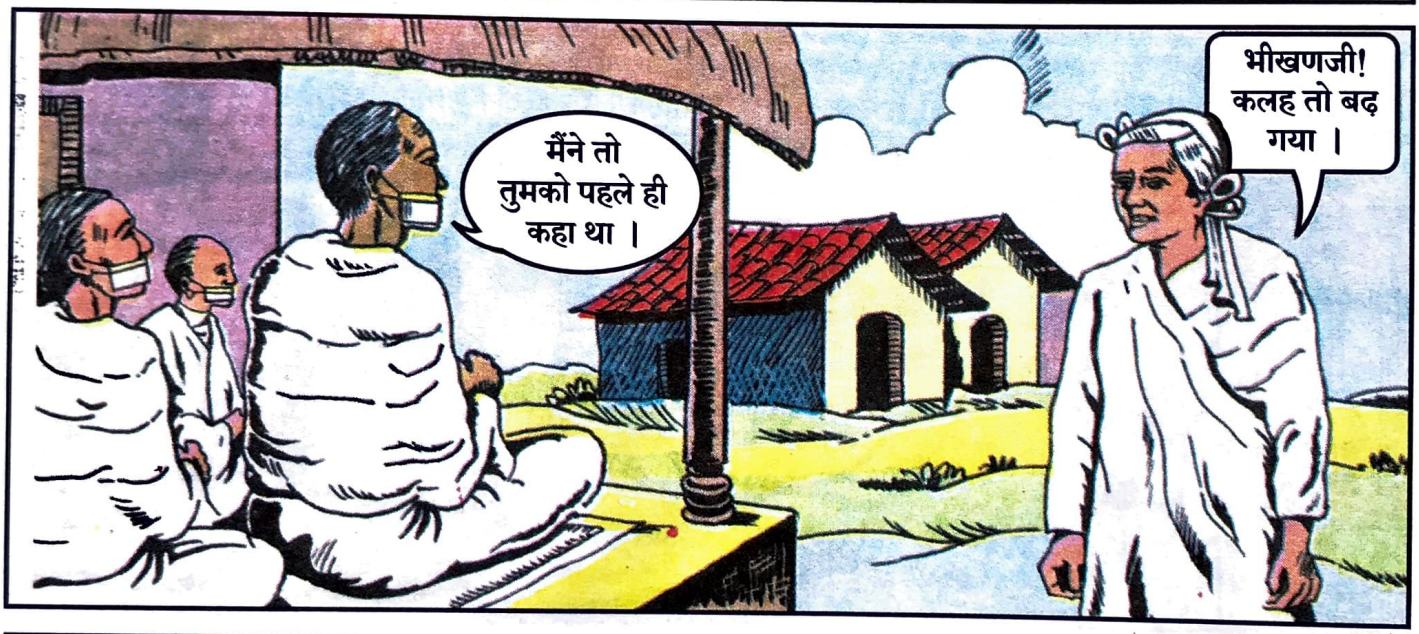

* किसी स्थानकवासी साधु की गलती पर रुष्ट होकर एक स्थानकवासी श्रावक स्वामीजी के पास आया और बोला -

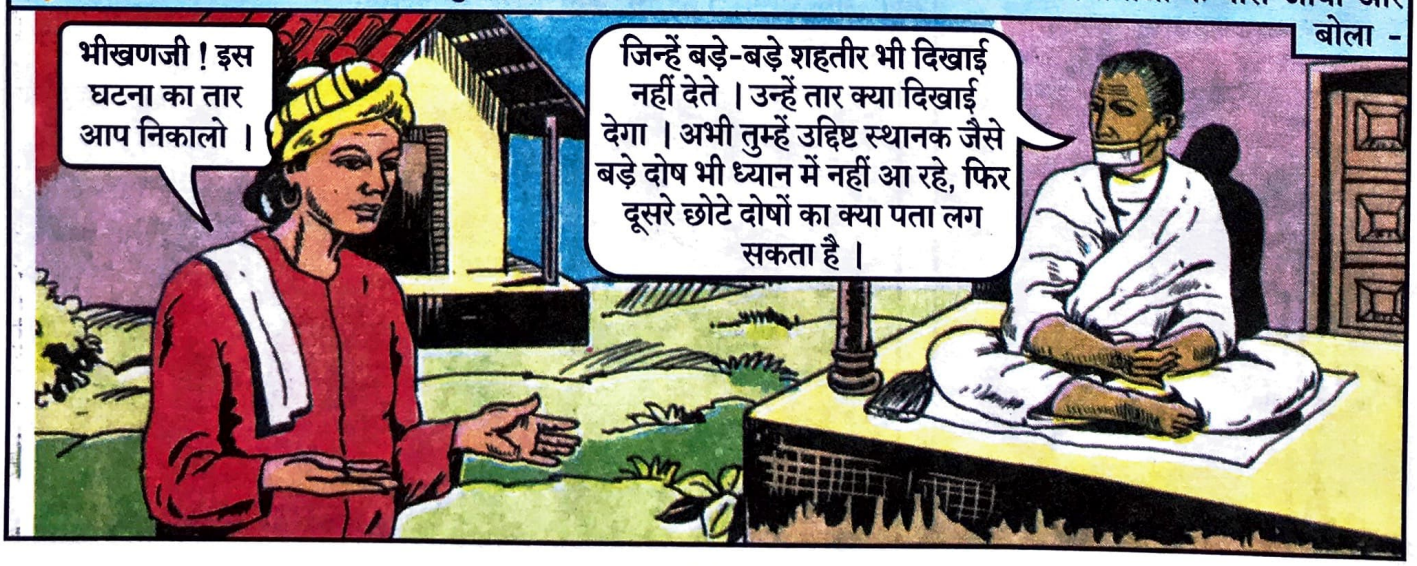

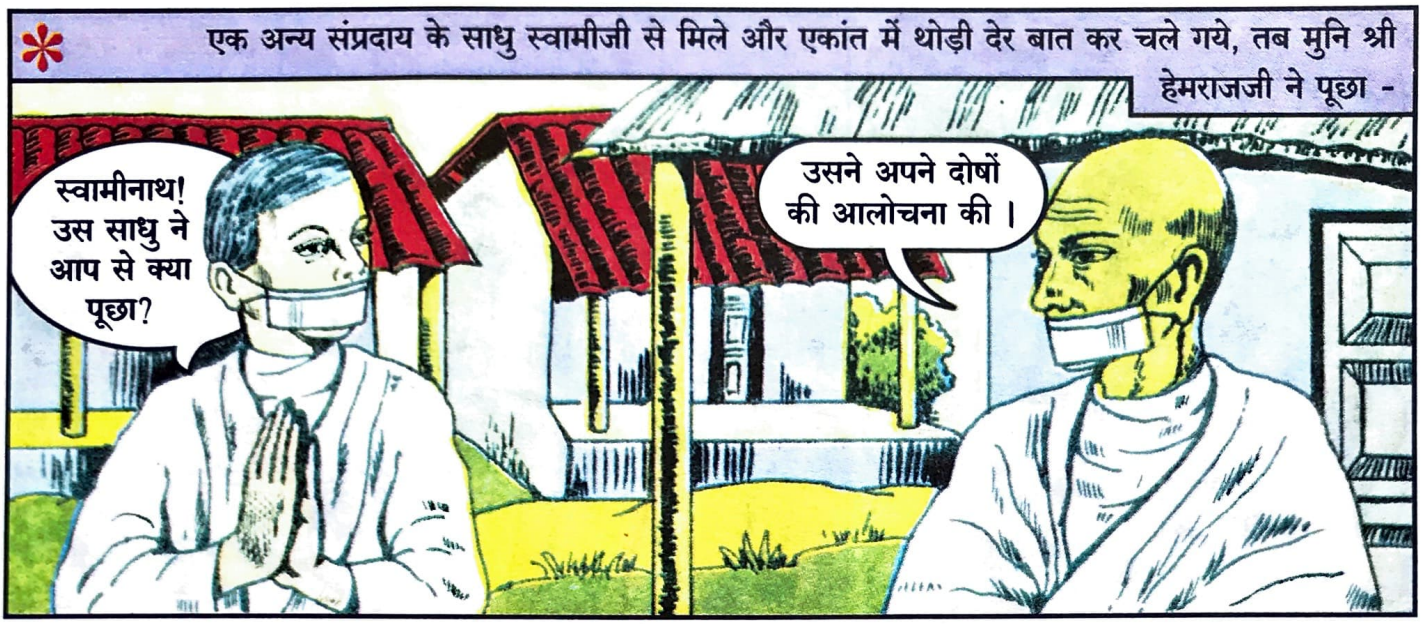
एक अन्य संप्रदाय के साधु स्वामीजी से मिले और एकांत में थोड़ी देर बात कर चले गये, तब मुनि श्री हेमराजजी ने पूछा -
स्वामीनाथ! उस साधु ने आप से क्या पूछा?
उसने अपने दोषों की आलोचना की ।

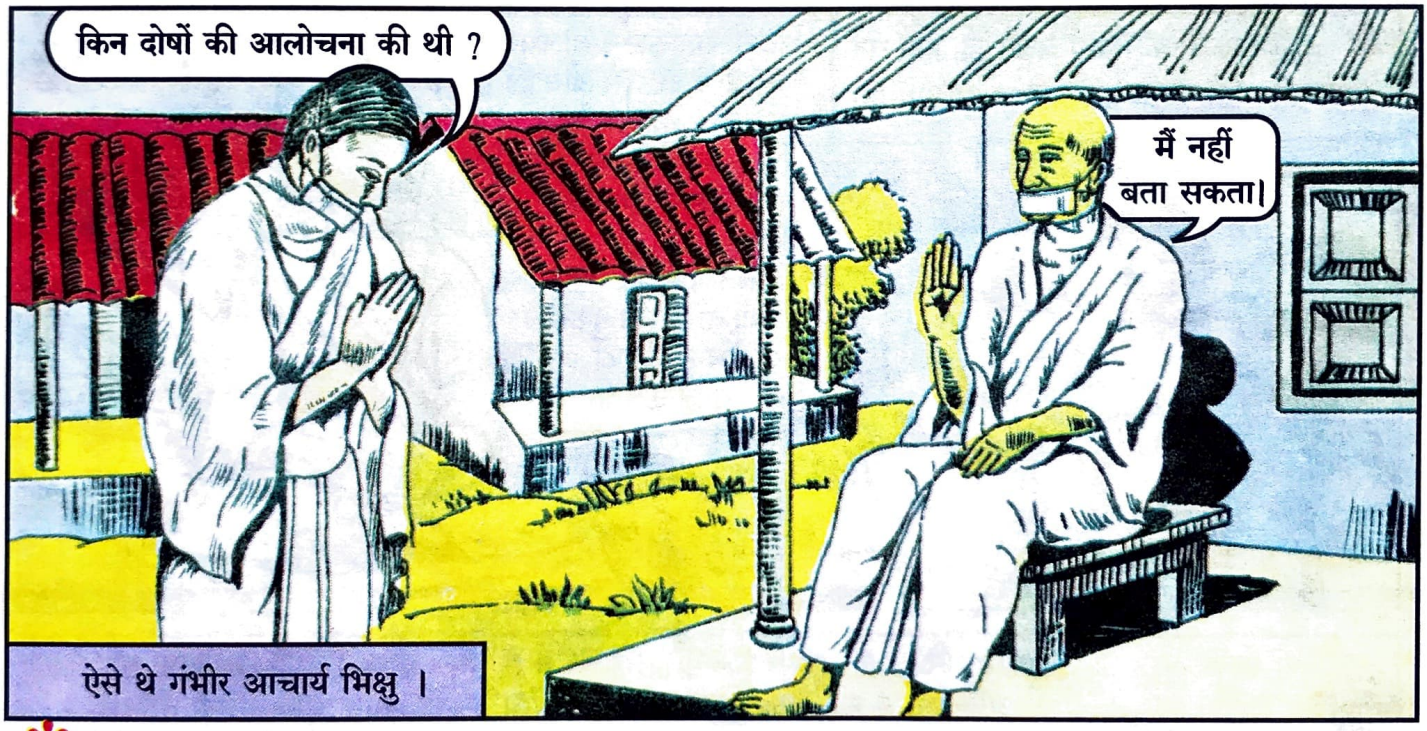
किन दोषों की आलोचना की थी ?
मैं नहीं बता सकता।
ऐसे थे गंभीर आचार्य भिक्षु ।

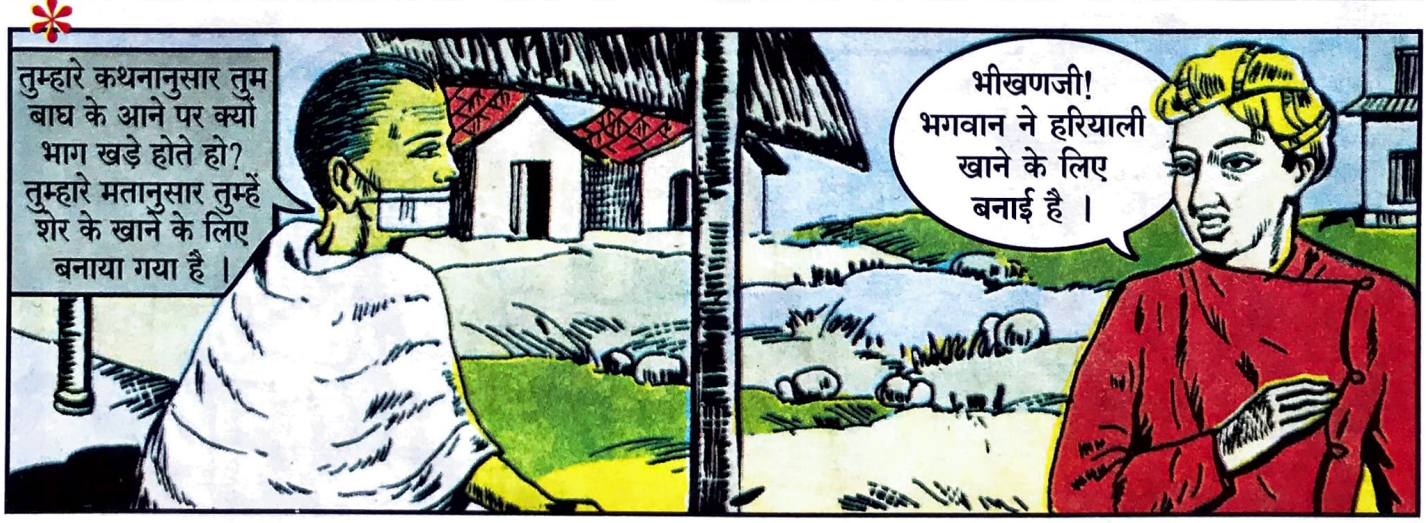
तुम्हारे कथनानुसार तुम बाघ के आने पर क्यों भाग खड़े होते हो? तुम्हारे मतानुसार तुम्हें शेर के खाने के लिए बनाया गया है ।
भीखणजी! भगवान ने हरियाली खाने के लिए बनाई है ।

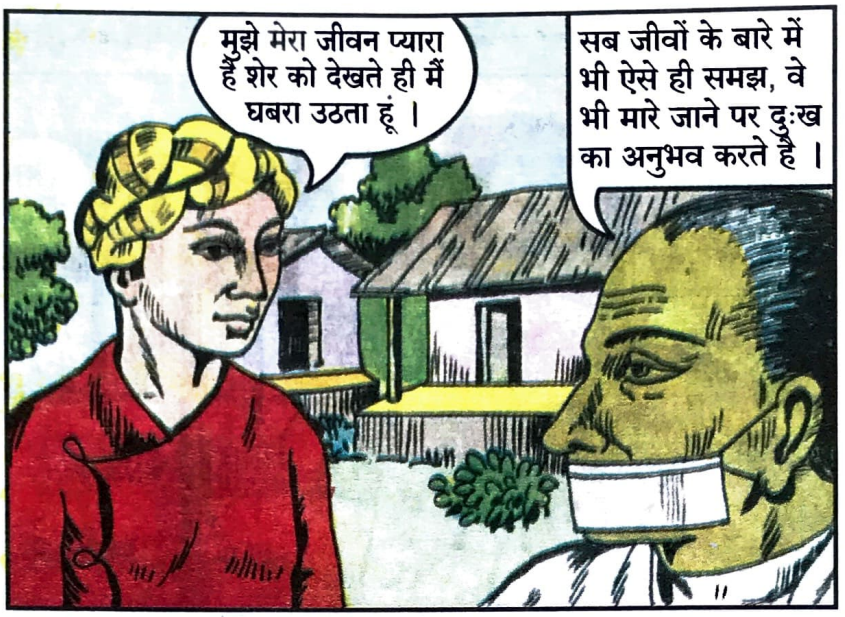
मुझे मेरा जीवन प्यारा है शेर को देखते ही मैं घबरा उठता हूं ।
सब जीवों के बारे में भी ऐसे ही समझ, वे भी मारे जाने पर दुःख का अनुभव करते है ।

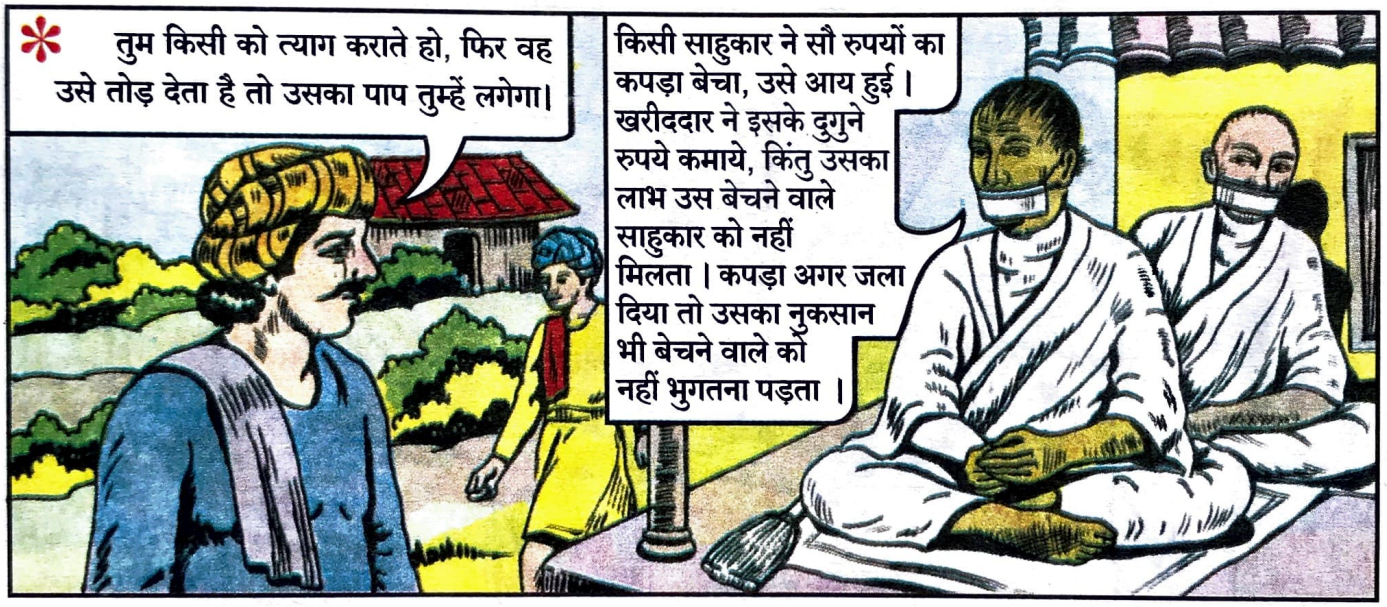
* तुम किसी को त्याग कराते हो, फिर वह उसे तोड़ देता है तो उसका पाप तुम्हें लगेगा।
किसी साहुकार ने सौ रुपयों का कपड़ा बेचा, उसे आय हुई । खरीददार ने इसके दुगुने रुपये कमाये, किंतु उसका लाभ उस बेचने वाले साहुकार को नहीं मिलता । कपड़ा अगर जला दिया तो उसका नुकसान भी बेचने वाले को नहीं भुगतना पड़ता ।

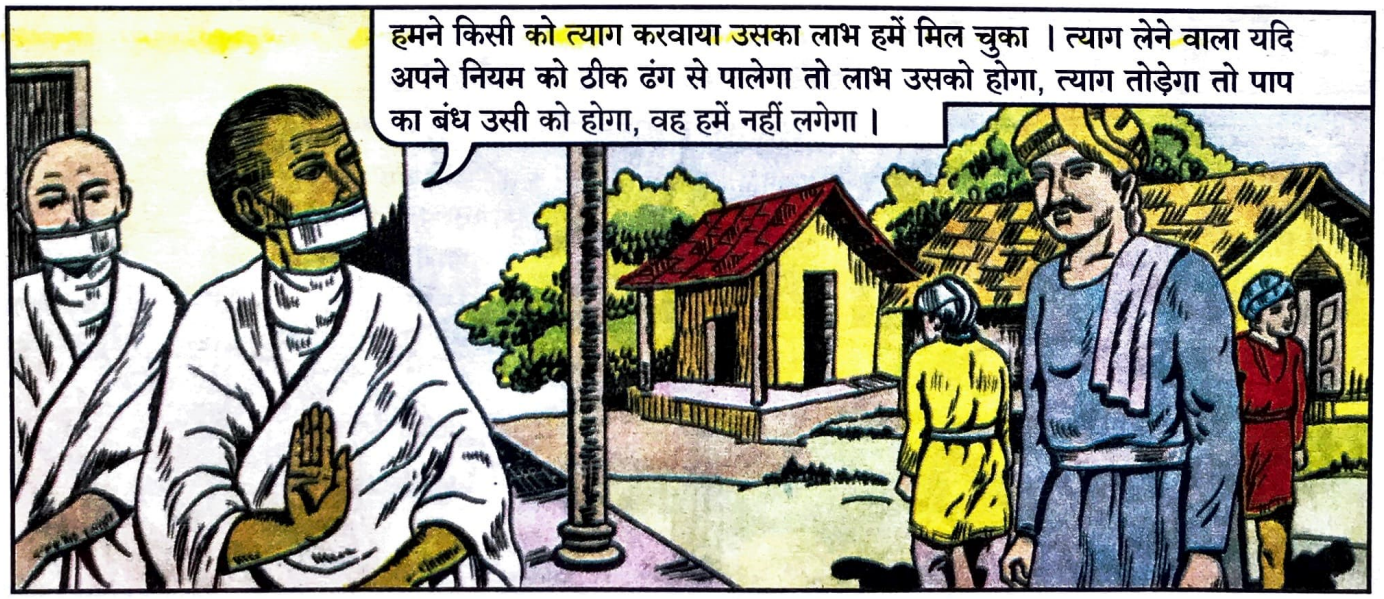
हमने किसी को त्याग करवाया उसका लाभ हमें मिल चुका । त्याग लेने वाला यदि अपने नियम को ठीक ढंग से पालेगा तो लाभ उसको होगा, त्याग तोड़ेगा तो पाप का बंध उसी को होगा, वह हमें नहीं लगेगा ।

अच्छे और बुरे गुरु पर स्वामीजी ने एक दृष्टान्त दिया -
तीन प्रकार की नौकांए हैं - पहली काष्ठ की अखण्ड, दूसरी काष्ठ की फूटी हुई तथा तीसरी है पत्थर की...

...अखण्ड नौका के समान साधु होता है जो स्वयं तरता है दूसरों को भी तारता है...

...फूटी हुई नौका के समान वेषधारी होता है जो स्वयं डूबता है, दूसरों को डुबोता है...

...पत्थर की नौका के समान वे पाखंडी होते है जो प्रत्यक्ष रूप में विरुद्ध दिखाई देते हैं...

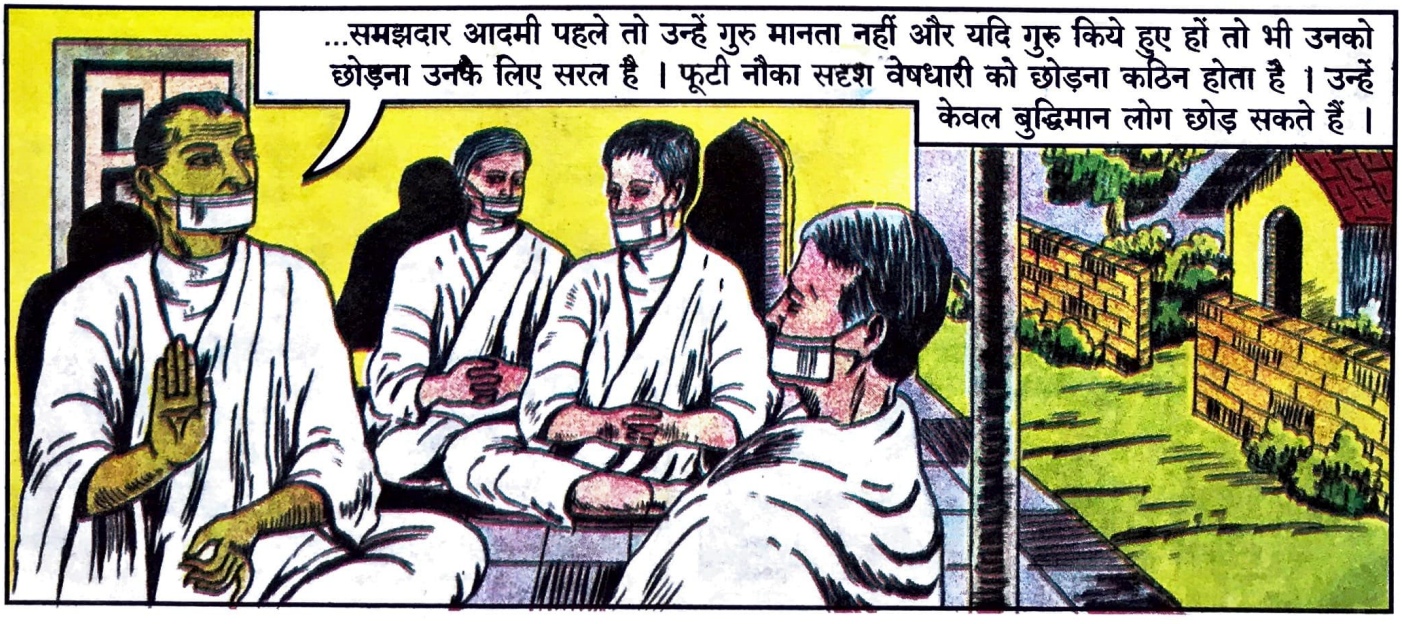
...समझदार आदमी पहले तो उन्हें गुरु मानता नहीं और यदि गुरु किये हुए हों तो भी उनको छोड़ना उनके लिए सरल है । फूटी नौका सदृश वेषधारी को छोड़ना कठिन होता है । उन्हें केवल बुद्धिमान लोग छोड़ सकते हैं ।

✻ गुरु का कितना मूल्य होता है, इस पर स्वामीजी कहते हैं -

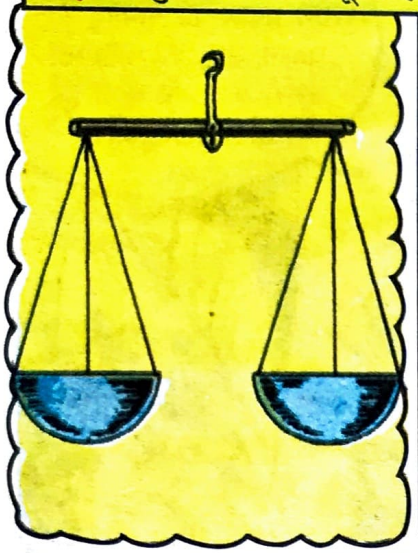

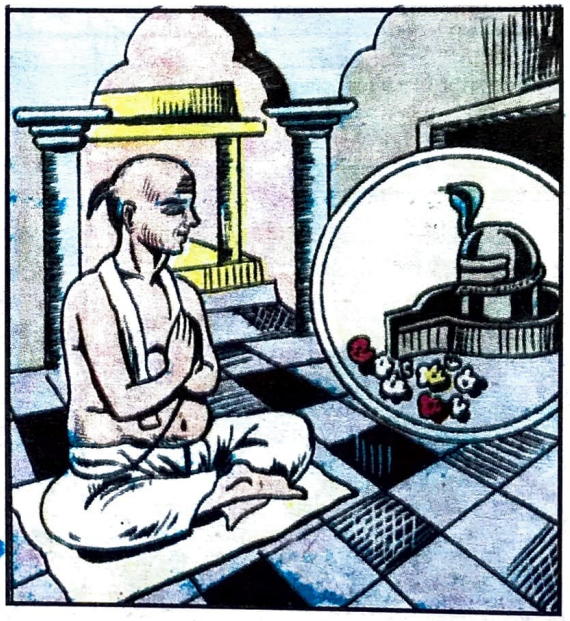

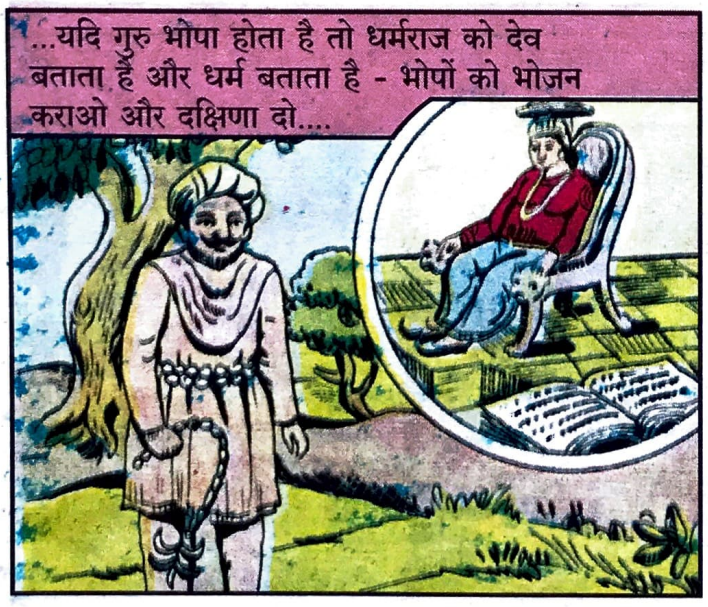

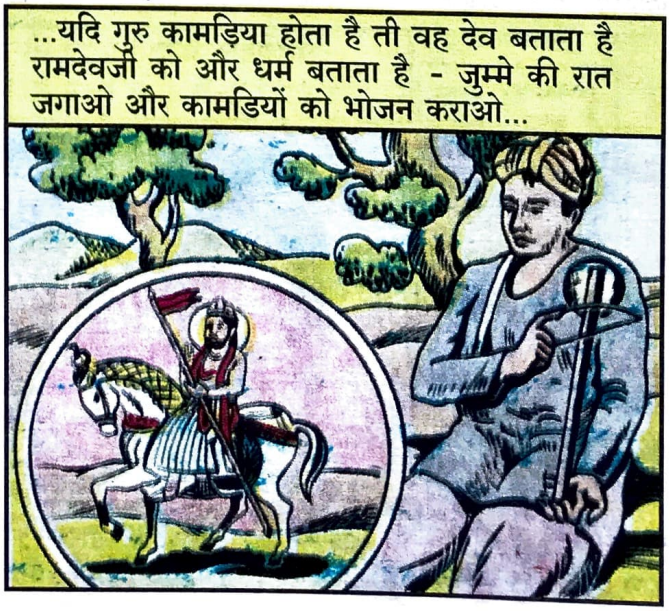

...गुरु अगर निर्ग्रन्थ होता है तो वह देव अर्हत् को तथा धर्म बताता है - भगवान की आज्ञा में...

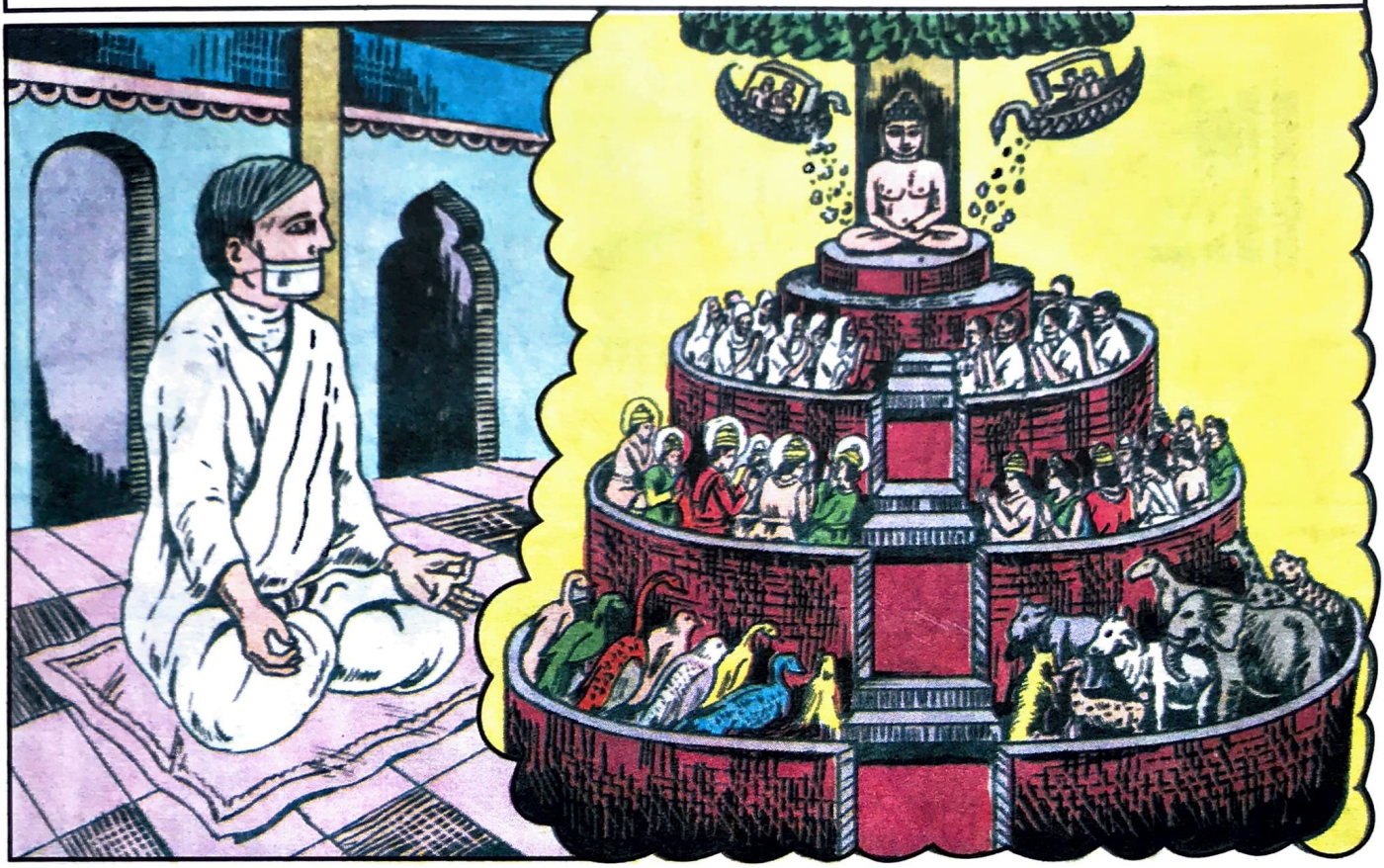

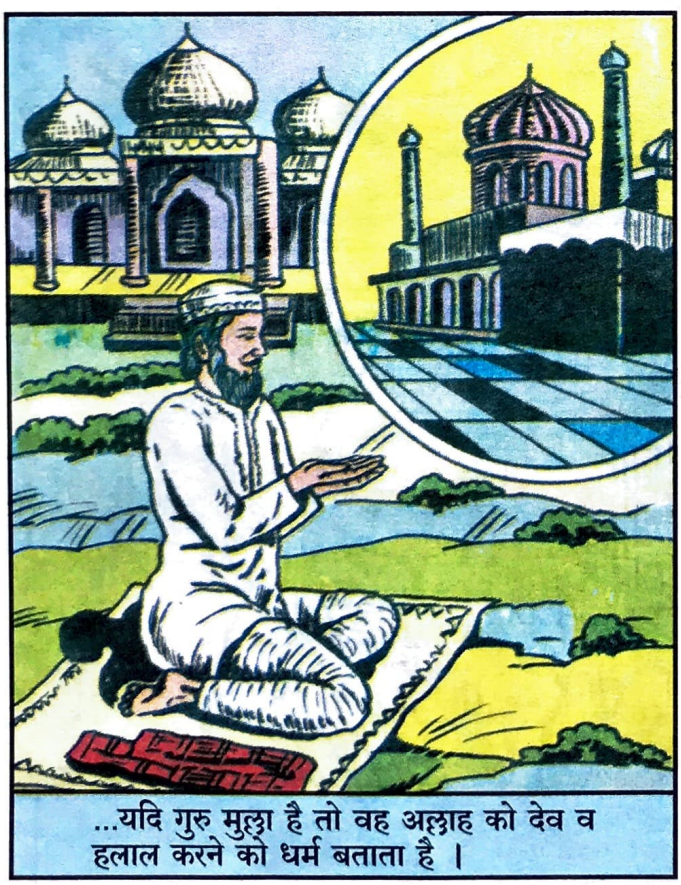

...यदि गुरु मुल्ला है तो वह अल्लाह को देव व हलाल करने को धर्म बताता है ।

...इस दृष्टान्त के अनुसार जैसा गुरु मिलता है, वैसे ही देव और धर्म को बतलाता है ।

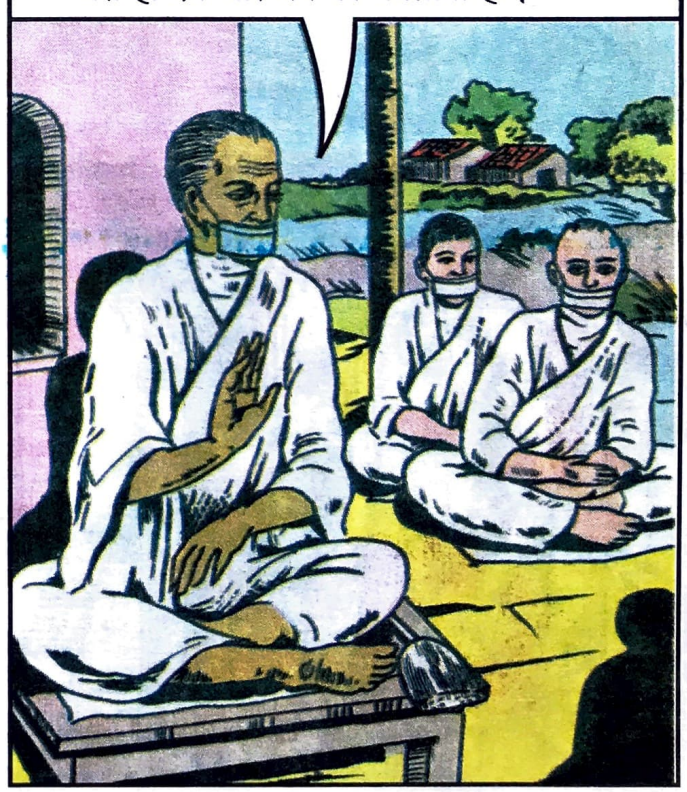

आचार्य भिक्षु ने अहिंसा-दया के संदर्भ में तीन दृष्टांत दिये - पहला दृष्टान्त

किसी माहेश्वरी की दुकान में साधु ठहरे, रात के समय चोर आए, दुकान खोली, तब साधु बोले...

तुम कौन हो?

हम चोर हैं। यहां चोरी करने आये हैं।

भाई! चोरी का फल बहुत बुरा होता है। इससे आगे नरक में दुःख भुगतना पड़ता है। यह चोरी किया हुआ धन सब भोगेंगे और दुःख तुम्हें पाना पड़ेगा।

इस प्रकार चोरी का फल बताकर उन चोरों को चोरी करने का त्याग करा दिया। शेष रात्रि उन चोरों ने साधुओं के गुणानुवाद व धर्म-चर्चा में बिताई। प्रातः वह माहेश्वरी आया। उसके पूछने पर चोरों ने कहा -

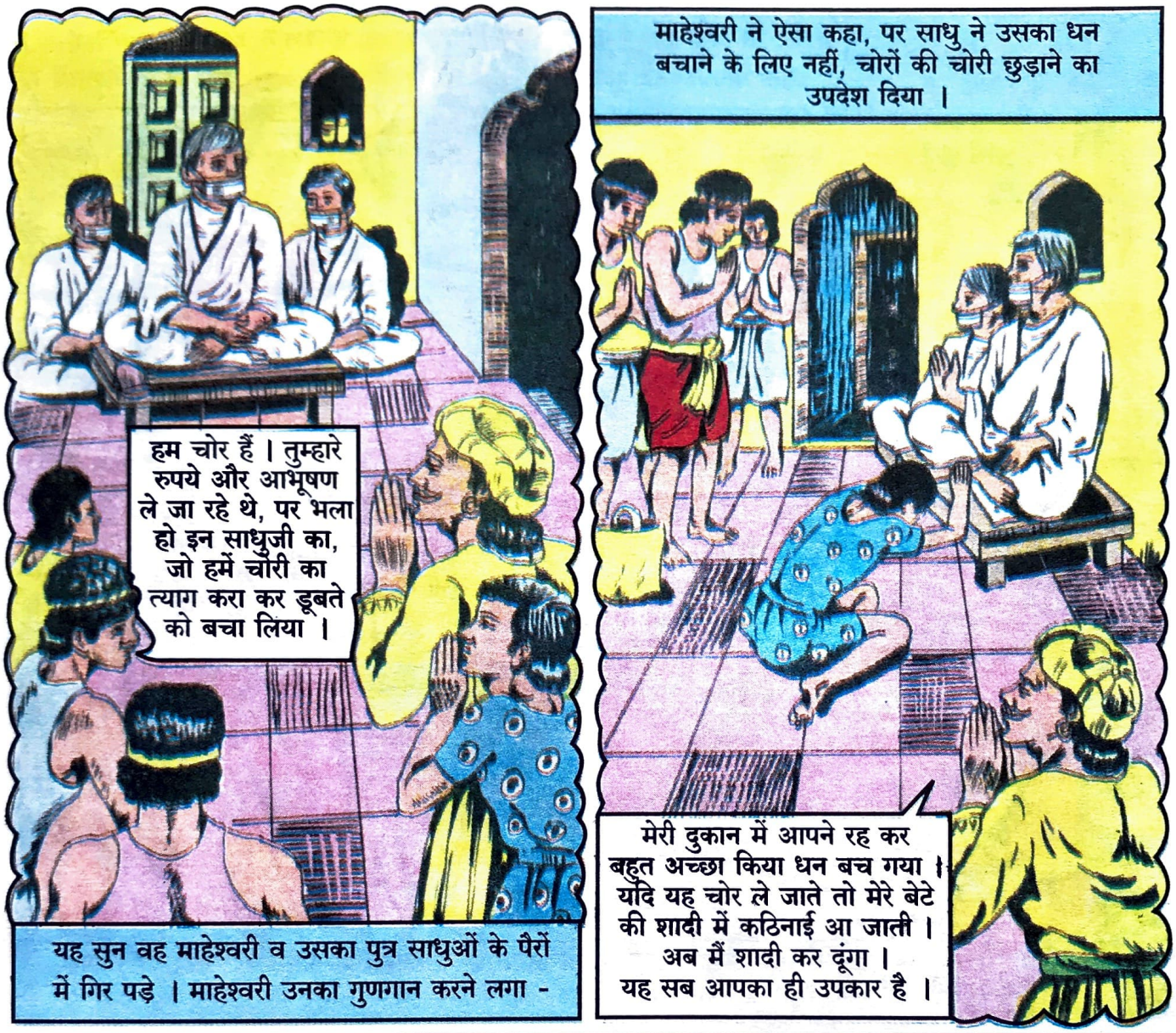

हम चोर हैं । तुम्हारे रुपये और आभूषण ले जा रहे थे, पर भला हो इन साधुजी का, जो हमें चोरी का त्याग करा कर डूबते को बचा लिया ।
यह सुन वह माहेश्वरी व उसका पुत्र साधुओं के पैरों में गिर पड़े । माहेश्वरी उनका गुणगान करने लगा -
माहेश्वरी ने ऐसा कहा, पर साधु ने उसका धन बचाने के लिए नहीं, चोरों की चोरी छुड़ाने का उपदेश दिया ।
मेरी दुकान में आपने रह कर बहुत अच्छा किया धन बच गया । यदि यह चोर ले जाते तो मेरे बेटे की शादी में कठिनाई आ जाती । अब मैं शादी कर दूंगा । यह सब आपका ही उपकार है ।
दूसरा दृष्टांत - तीन कसाई बकरों को आगे किये हाथ में छुरी लिए जंगल में खड़े थे । तब साधु ने पूछा -
तुम कौन हो?
क्या धंधा करते हो?
हम कसाई हैं ।
प्रतिदिन बकरे मार कर मांस बेचते हैं ।

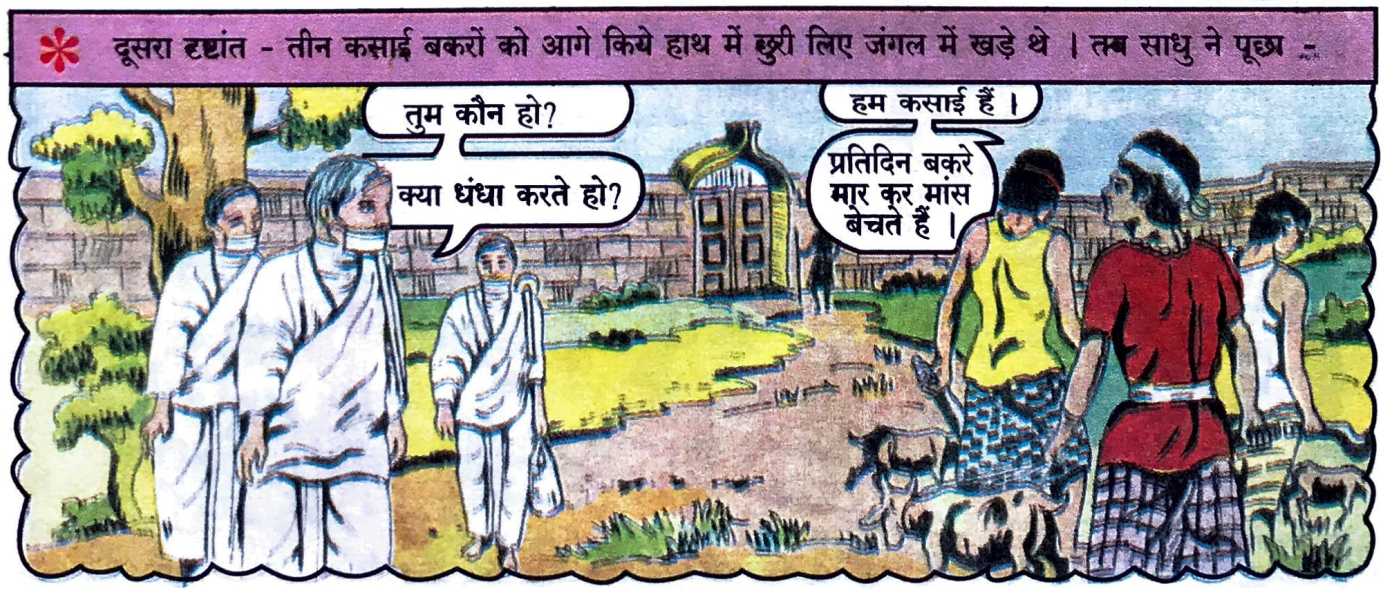

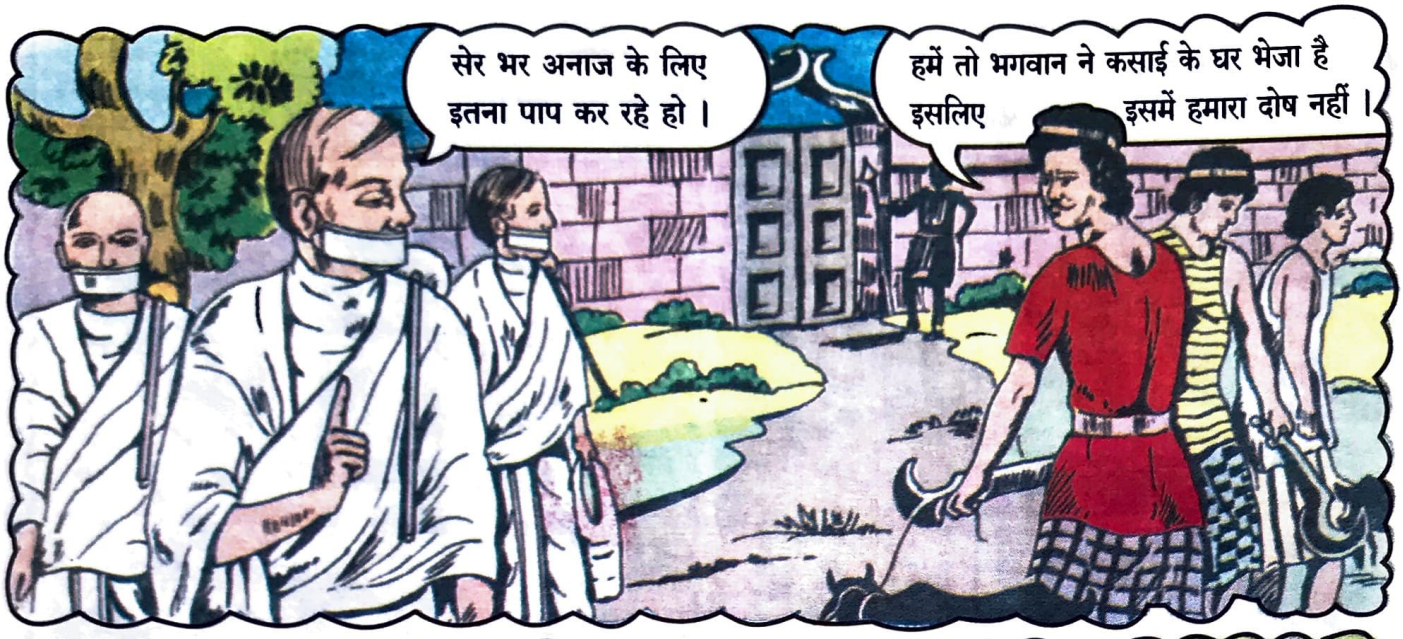

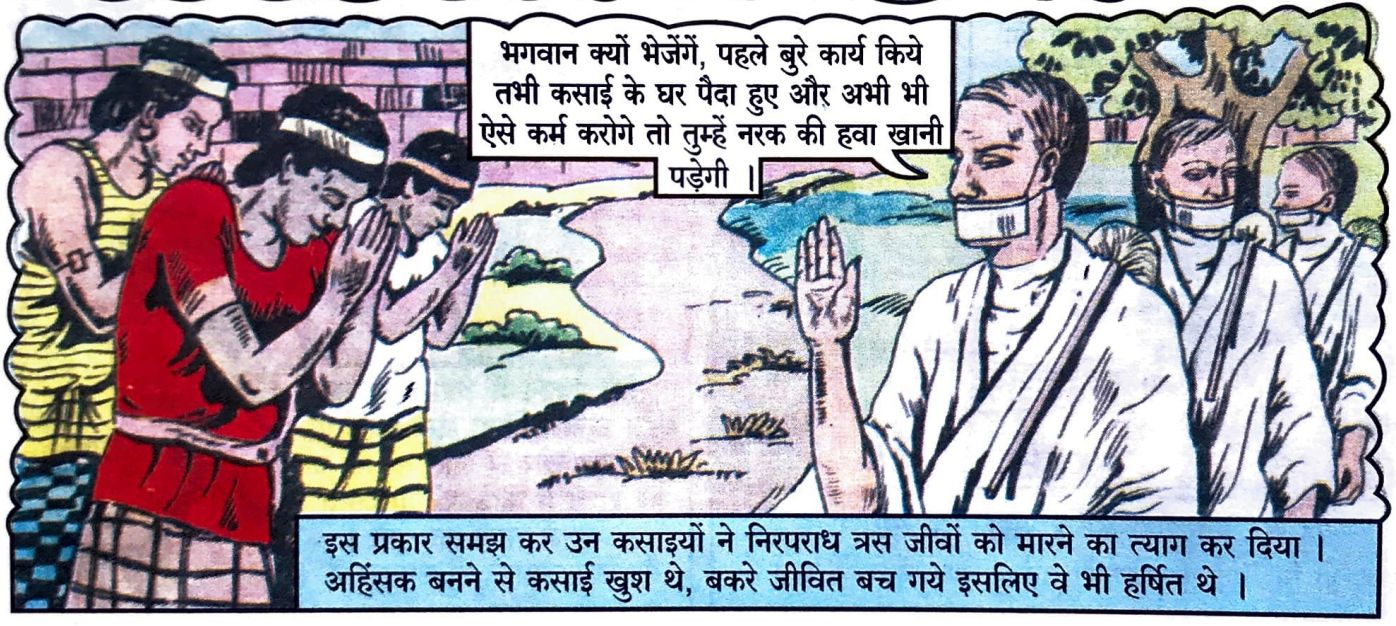

इस प्रकार समझ कर उन कसाइयों ने निरपराध त्रस जीवों को मारने का त्याग कर दिया । अहिंसक बनने से कसाई खुश थे, बकरे जीवित बच गये इसलिए वे भी हर्षित थे ।

तीसरा दृष्टांत - अर्ध रात्रि के समय तीन साधु बाजार की एक दुकान में स्वाध्याय कर रहे थे । संयोगवश तीन व्यक्ति उधर से निकले । साधुओं ने उन्हें देखा और पूछा -

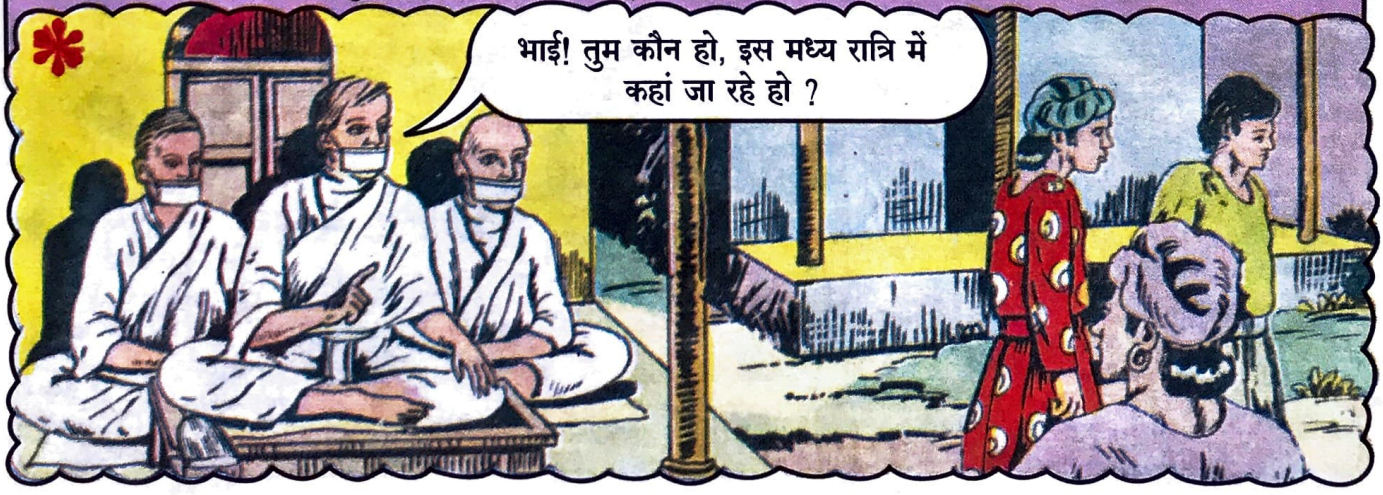

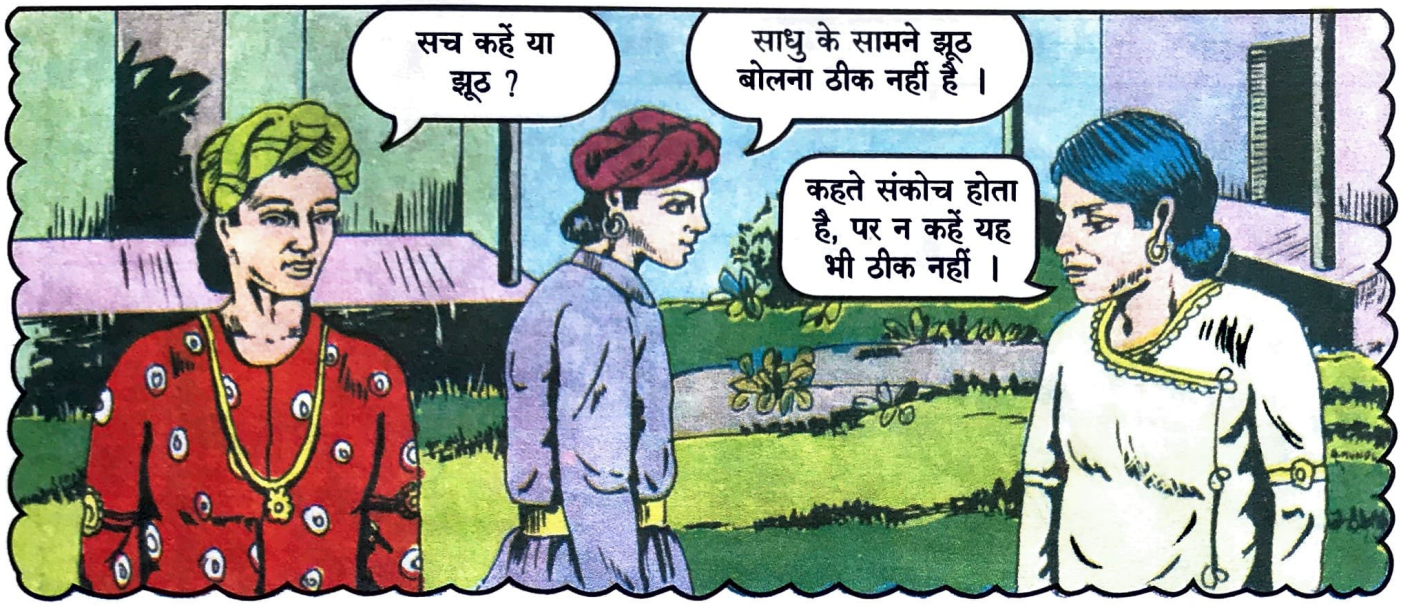
सच कहें या झूठ ?
साधु के सामने झूठ बोलना ठीक नहीं है ।
कहते संकोच होता है, पर न कहें यह भी ठीक नहीं ।

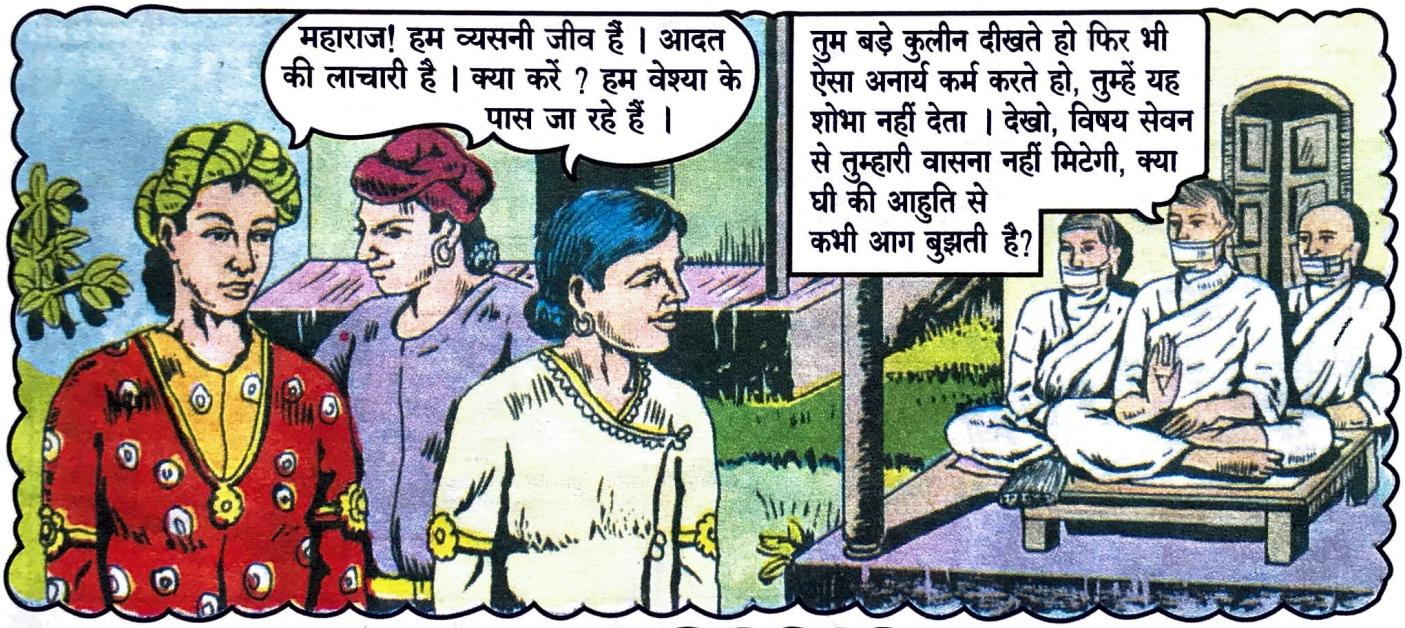
महाराज! हम व्यसनी जीव हैं । आदत की लाचारी है । क्या करें ? हम वेश्या के पास जा रहे हैं ।
तुम बड़े कुलीन दीखते हो फिर भी ऐसा अनार्य कर्म करते हो, तुम्हें यह शोभा नहीं देता । देखो, विषय सेवन से तुम्हारी वासना नहीं मिटेगी, क्या घी की आहुति से कभी आग बुझती है?

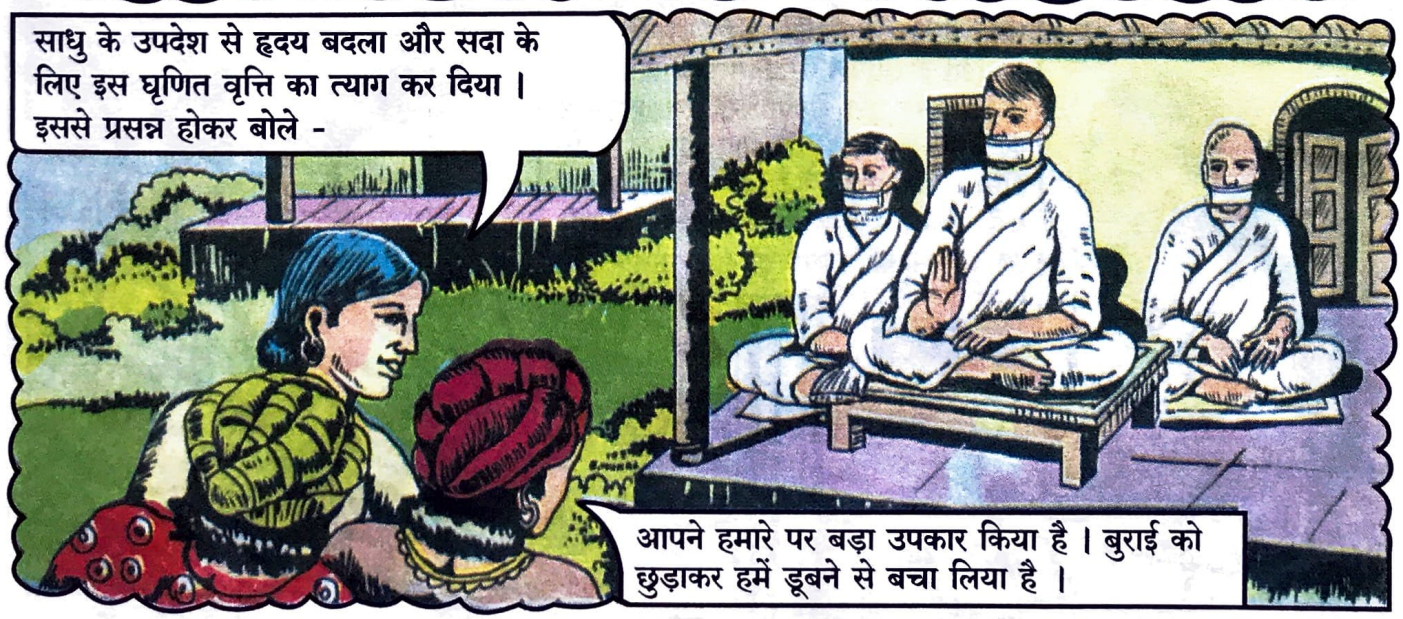
साधु के उपदेश से हृदय बदला और सदा के लिए इस घृणित वृत्ति का त्याग कर दिया । इससे प्रसन्न होकर बोले -
आपने हमारे पर बड़ा उपकार किया है । बुराई को छुड़ाकर हमें डूबने से बचा लिया है ।

आखिर वेश्या उनको खोजती हुई वहां पहुंच गई और बोली -

अब हम इस पाप को छोड़ चुके हैं फिर उसे नहीं अपनाएंगे ।

आप यहां क्या कर रहे हैं ? मैं तो आपका इन्तजार कर रही हूं । या तो चलें। नहीं तो मैं कुएं में पड़ती हूं ।

उन तीनों की बात को सुना-अनसुना कर उस वेश्या ने कुएं में गिरकर आत्महत्या कर ली ।

आचार्य भिक्षु इस पर कहते हैं -

चोर समझे, धन रह गया। कसाई ने हिंसा छोड़ी, बकरे बचे । व्यभिचारी ने व्यभिचार छोड़ा, वेश्या मरी, इन...

तीनों घटनाओं में चोर, कसाई व व्यभिचारी ने साधुओं के उपदेश से अपने पाप-कार्य छोड़े, धन व बकरे बचे, वेश्या मरी - ये प्रासंगिक कार्य हैं । उनका धर्म व पाप साधु को नहीं होता । जो यह कहते हैं कि धन और बकरे बचे, उसका धर्म होता है तो वह वेश्या मरी उसका पाप भी लगना चाहिये । जबकि ऐसा होता नहीं है ।

स्वामीजी अपने गुरु से अलग हुए, साध्वियों की दीक्षा हुई नहीं थी, उस समय की बात है । किसी ने पूछा -

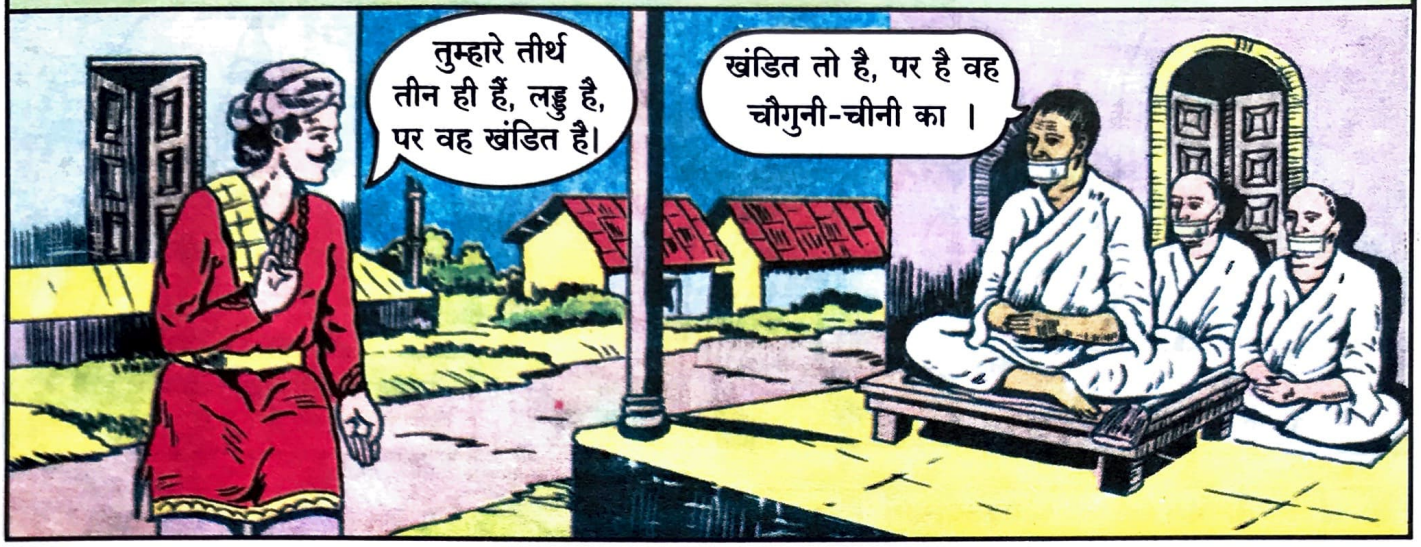

स्वामीजी के नई दीक्षा लेने के चार वर्ष बाद सं. १८२१ में तीन बहिनें दीक्षा लेने उपस्थित हुई तब स्वामीजी ने कहा -

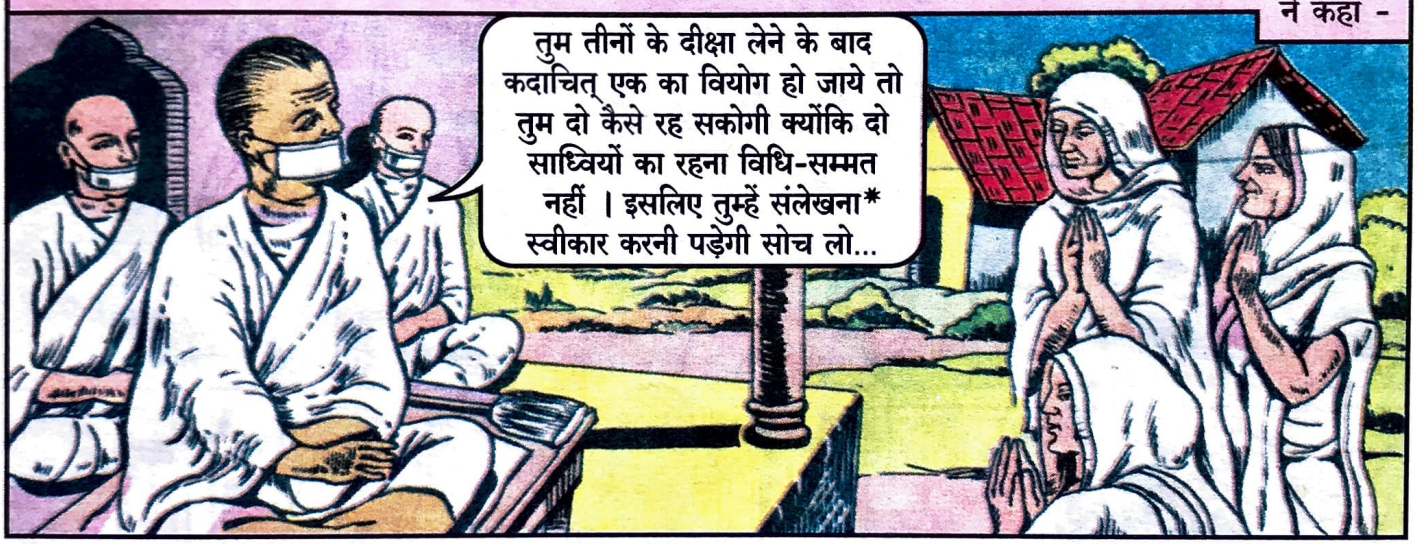

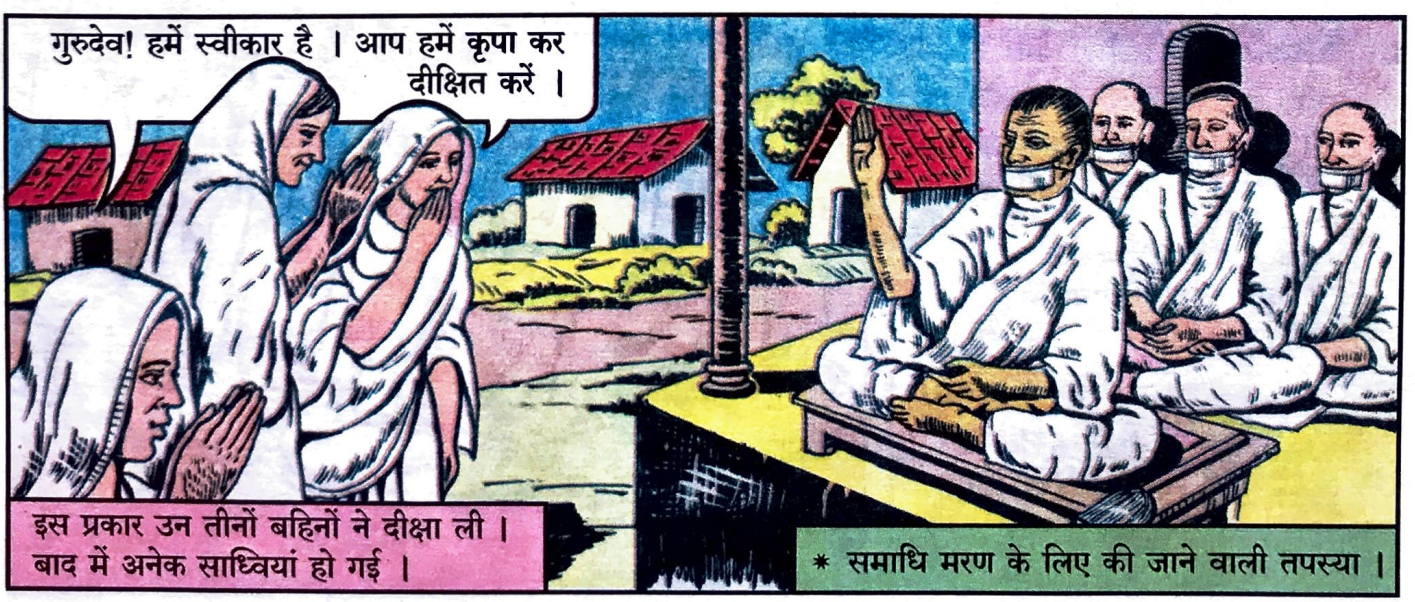

इस प्रकार उन तीनों बहिनों ने दीक्षा ली । बाद में अनेक साध्वियां हो गई ।

* समाधि मरण के लिए की जाने वाली तपस्या ।

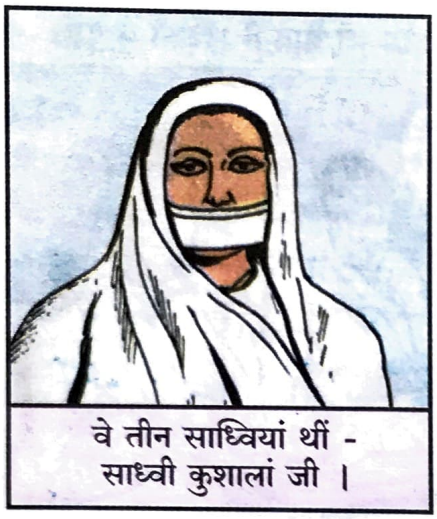

वे तीन साध्वियां थीं -
साध्वी कुशालां जी ।

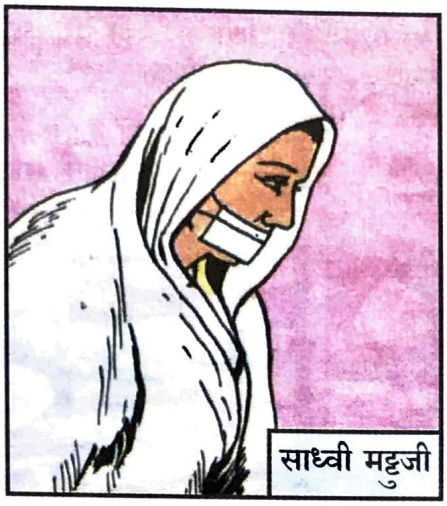

साध्वी मट्टुजी

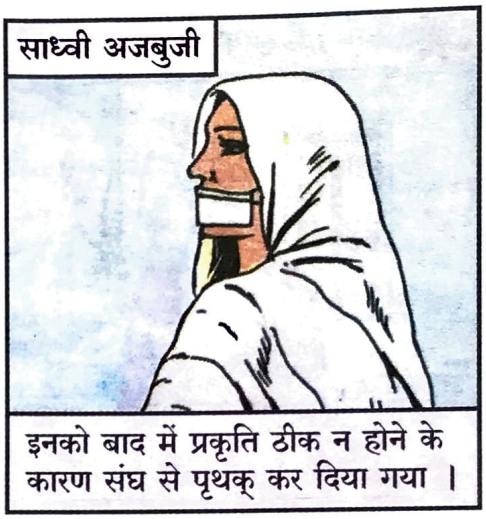

साध्वी अजबुजी

इनको बाद में प्रकृति ठीक न होने के
कारण संघ से पृथक् कर दिया गया ।

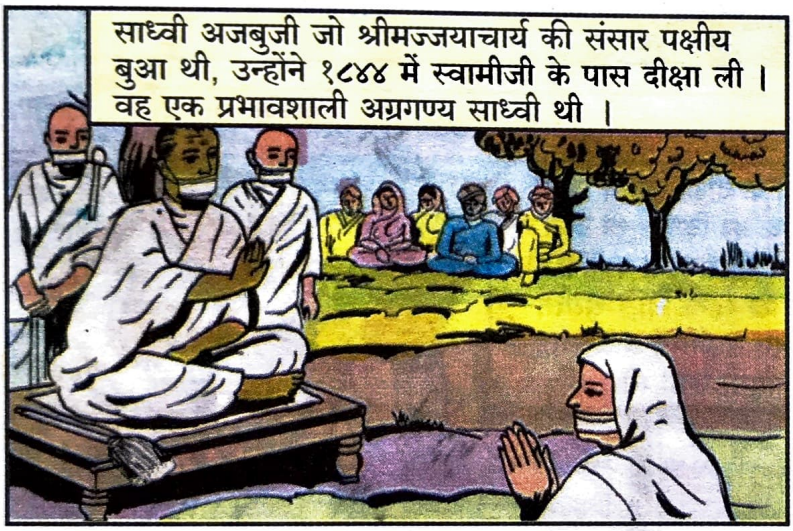

साध्वी अजबुजी जो श्रीमज्जयाचार्य की संसार पक्षीय
बुआ थी, उन्होंने १८४४ में स्वामीजी के पास दीक्षा ली ।
वह एक प्रभावशाली अग्रगण्य साध्वी थी ।

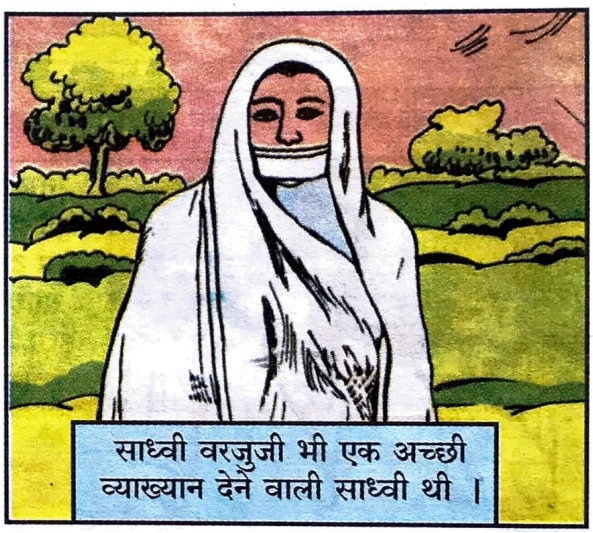

साध्वी वरजुजी भी एक अच्छी
व्याख्यान देने वाली साध्वी थी ।

इस तरह साध्वियों की संख्या
में वृद्धि होती गई । स्वामीजी
के शासन काल नें ४९ साधु व
५६ साध्वियां बनीं । स्वामीजी
जब स्वर्गवासी बने तब २१
साधु व २७ साध्वियां मौजूद थीं।

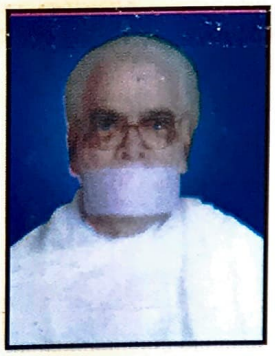

मुनि श्री सुमेरमल जी (लाडनूं)

जन्म - चैत्र शुक्ला 14, सं. 1989, लाडनूं (राज.),
दीक्षा - माघ शुक्ला 7, सं 1998, सरदारशहर (राज.)
आचार्य श्री तुलसी द्वारा
अग्रगण्य - ज्येष्ठ कृष्णा 3 सं. 2010, भीनासर (राज.)
सम्बोधन - तेरापंथ दर्शन मनीषी - माघ शुक्ला ६ सं. 2060, जलगांव (महाराष्ट्र)
विशेष : तीन मुमुक्षुओं को गुरु - निर्देश से दीक्षा प्रदान

मुनि श्री द्वारा लिखित चित्रकथा माला

अखूट खजाना

जैन धर्म में सामायिक एवं संत दर्शन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । इसके महत्व को प्रतिपादित करने वाले दो कथानक इस चित्रकथा में लिये गये हैं ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-1

तेरापंथ के प्रवर्तक, महान् संत, शिथिलाचार के विरुद्ध शंखनाद फूंकने वाले आचार्य भिक्षु के जन्म, स्थानकवासी परंपरा में दीक्षा व अभिनिष्क्रमण का चित्रण है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-2

अभिनिष्क्रमण के बाद विरोध का स्वर बुलंद हुआ, केलवा की अंधेरी ओरी में तेरापंथ की विधिवत् स्थापना हुई । आहार पानी व स्थान की समस्या सामने आई, इन स्थितियों का सजीव निदर्शन है ।

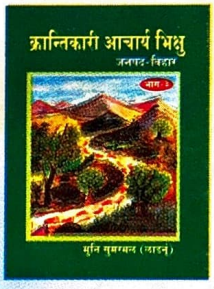

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-3

आचार-संहिता का कड़ाई से पालन, सिद्धान्त प्रतिपादन की कुशलता, असंकीर्णता, न्यायप्रियता, संघर्ष में भी शीतलता एवं संतुलन, प्रत्युत्पन्न मति, विनोद प्रियता जैसी विशेषताओं को प्रकट करते आचार्य भिक्षु के जीवन संस्मरणों का गुंफन है।

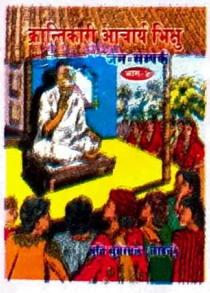

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-4

आचार्य भिक्षु हर बात को कथानाक व दृष्टांत के माध्यम से हरेक के गले उतार देते थे । उनका जनसंपर्क व्यापक था । ठाकुर (जागीरदार) से लेकर ठेट किसान तक उनसे प्रभावित थे । प्रस्तुत भाग में उनके जनसंपर्क की एक झलक प्रदर्शित की गई है ।

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-5

आचार्य भिक्षु आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे । उनके पास जो कोई भी आता वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता । विरोधी लोग भी उनकी विद्वता, साधनाशीलता कुशल वक्तृत्व एवं कष्ट सहिष्णुता का लोहा मानते थे । इन सबकी झलक इस भाग में है ।

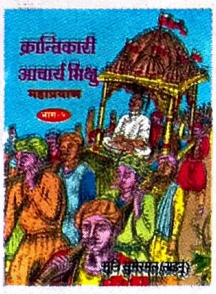

क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु - भाग-6

तेरापंथ के दूसरे आचार्य श्री भारमल जी आचार्य श्री भिक्षु के सर्वात्मना समर्पित थे । तीसरे आचार्य श्री रायचन्द जी बड़े पुण्यवान आचार्य थे ।
दोनों स्वामीजी के हाथों दीक्षित हुए । प्रस्तुत चित्र कथा में दोनों के जीवन की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है ।

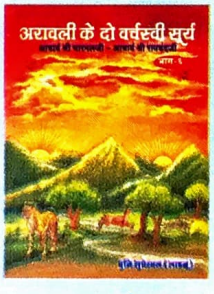

मुनि श्री की अन्य कथा पुस्तकें ।

1. परीलोक
2. बुद्धिलोक
3. नीतिलोक
4. प्रज्ञालोक
5. सत्यलोक
6. दिव्यलोक
7. नारीलोक
8. कर्मलोक
9. उपकार
10. संस्कार
11. सप्त व्यसन
12. विद्याधर श्रीपाल
13. जादूगर श्रीकांत
14. नैतिक कहानियां भाग-1
15. नैतिक कहानियां भाग - 2 आदि - आदि ।

आशीर्वचन

चित्रकथा साहित्य की आकर्षक विधा है । यह आबालवृद्ध सबके मन को भाती है । भावी पीढ़ी के लिए तो यह संस्कार-निर्माण की कुन्जी बन सकती है । चित्रकथाएं बहुत लिखी जाती हैं, पर जो सुरुचिपूर्ण, संस्कार निर्मात्री और संघीय निष्ठा जगाने वाली चित्रकथा हो, उसका महत्त्व ही अलग है, "क्रान्तिकारी आचार्य भिक्षु" चित्रकथा हमारे संघीय इतिहास को उजागर करती है । संस्कार-निर्माण की दृष्टि से भी उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है । इनमें वर्णित आचार्य भिक्षु के प्रेरक जीवन प्रसंग पाठकों के लिये बोधपाठ का काम करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है।

मुनि सुमेर (लाडनूं) इतिहास वेत्ता तो है ही, वह आज की भाषा में आज के तरीके से इतिहास लेखन के मर्म को भी पहचानता है । उसकी संघनिष्ठा और समाज में संघीय संस्कार भरने का कौशल बेजोड़ है । कलकत्ता महानगर का पंचवर्षीय प्रवास इसका साक्षी है । अहमदाबाद में भी वह सुनियोजित रूप में सतत काम कर रहा है । अन्यान्य कार्यों के साथ संघ के लिये उपयोगी साहित्य चित्रकथा के निर्माण का सिलसिला सिद्ध करता है कि वह समय-नियोजन की कला में भी निष्णात है ।

विशेष उद्देश्य के साथ लिखी गई ये चित्रकथाएं पाठकों के आकर्षण को बनाये रखती हुई बच्चों के संस्कार निर्माण में उपयोगी बने, यही मंगल भावना है।

२४ जनवरी, १९९७

गणाधिपति तुलसी

आचार्य महाप्रज्ञ